हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार, 26 अक्टूबर 2025

11 नशे का धंधा छोड़ दें या फिर सिरसा जिला : एसपी सहारण

12 सफाई कर्मियों ने रविवार को काम नहीं करने का किया ऐलान

खबर संक्षेप

प्रशासन का रात्रि प्रवास कार्यक्रम कल

फतेहाबाद। उपमंडल फतेहाबाद के अंतर्गत खंड नागपुर के गांव नूरकी अहली के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नजदीक राजीव गांधी सेवा केंद्र में 27 अक्टूबर को उपायुक्त डॉ. विवेक भारती और पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन लोगों से संवाद स्थापित करते हुए उनकी शिकायतें सुनेंगे। नगराधीश गौरव गुप्ता ने बताया कि अधिकारियों का रात्रि प्रवास कार्यक्रम भी गांव नूरकी अहली में होगा। गांव का कोई भी नागरिक इस दिन अपनी समस्या जिला प्रशासन के समक्ष रख सकते हैं। सीटीएम ने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए है कि वे 27 अक्टूबर को सायं 5 बजे आयोजित इस कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करें और रात्रि प्रवास में भी शामिल हों।

गांव कुम्हारिया में कल समस्याएं सुनेंगे अधिकारी

सिरसा। जिला प्रशासन द्वारा खंड नाथूसरी चौपटा के गांव कुम्हारिया के राजकीय प्राथमिक पाठशाला में 27 अक्टूबर को सायं 4 बजे से प्रशासन का रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान जिला प्रशासन के सभी विभाग दिन में आमजन को स्टॉल के माध्यम से योजनाओं की जानकारी देंगे और उनकी समस्याएं सुनेंगे। रात्रि ठहराव कार्यक्रम में जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों सहित सभी विभागों के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहेंगे।

ई-गवर्नेंस पुरस्कार के लिए आवेदन आमंत्रित

फतेहाबाद। ई-गवर्नेंस के कार्यान्वयन क्षेत्र में उत्कृष्टता की पहचान करने और इसे बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत सरकार प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार प्रदान करती है। योजना के तहत नामांकन करने की अंतिम तिथि 30 नवंबर है। उपायुक्त डॉ. विवेक भारती ने बताया कि केंद्रीय मंत्रालयों/विभागों, राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकारों, जिलों, स्थानीय निकायों, पंचायत, केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थाओं सरकारी अथवा गैर-सरकारी और स्टार्टअप से पुरस्कार योजना में वर्णित पात्रता मानदंडों के अनुसार विचारण के लिए 7 श्रेणियों में पोर्टल पर नामांकन मांगे गए हैं। पुरस्कार योजना के दिशा-निर्देशों और अन्य विवरण के साथ नामांकन भेजने की प्रक्रिया, विभाग की वेबसाइट पर दी गई है। पुरस्कार योजना में दिए गए विवरण अनुसार, नामांकन ऑनलाइन प्रस्तुत किए जाने हैं। ईमेल, डाक, कूरियर, फैक्स या हार्ड कॉपी द्वारा भेजे गए नामांकनों पर विचार नहीं किया जाएगा।

पराली में आग और आतिशबाजी से हवा में घुला जहर, एक्यूआई पहुंचा 370

सांसों और आंखों पर बढ़ा खतरा, 1200 से ज्यादा मरीज सिविल अस्पताल पहुंचे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

धान की पराली में आग और दीपावली पर आतिशबाजी के चलते इन दिनों फतेहाबाद की आबो-हवा में जहर-सा घुल गया है। हाल यह है कि बच्चे और बूढ़े तो क्या, आम जनजीवन भी प्रभावित हो गया है। पटाखों के भारी उपयोग और पराली में आगजनी की घटनाओं के बाद वातावरण में घुले प्रदूषक तत्वों के कारण जिले में अलसुबह धुंध छा जाती है। इसके परिणामस्वरूप, लोगों को आंखों में तेज जलन, खुजली, सांस लेने में तकलीफ और गले में खराश जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

प्रदूषण के इस खतरनाक स्तर का सीधा असर नागरिक अस्पताल की ओपीडी में दिखाई दे रहा है। बीते दो दिनों में आंखों और एलर्जी की शिकायत के मरीजों की संख्या में बढ़ोतरी दर्ज की है। चिकित्सा अधिकारियों के अनुसार, सामान्य दिनों में अस्पताल की ओपीडी में रोजाना लगभग एक हजार मरीज विभिन्न बीमारियों के लिए आते थे, लेकिन, दीपावली के बाद केवल आंखों में जलन और एलर्जी के ही 1200 से अधिक मरीज ओपीडी में पहुंचे हैं।

फतेहाबाद। अस्पतालों में उमड़ी मरीजों की भीड़। फोटो : हरिभूमि

यह रखें सावधानियां

- **घर के अंदर रहें और हवा साफ रखें** : बाहर निकलने से बचें, जब तक बहुत आवश्यक न हो, घर से बाहर न निकलें। खासकर सुबह और देर शाम के समय, जब प्रदूषण का स्तर सबसे अधिक होता है।
- **खिड़की-दरवाजे बंद रखें**: प्रदूषित हवा को घर के अंदर आने से रोकने के लिए सभी खिड़कियां और दरवाजे बंद रखें।
- **एयर प्यूरीफायर का उपयोग करें** : यदि उपलब्ध हो तो घर की हवा को साफ रखने के लिए एयर प्यूरीफायर का इस्तेमाल करें।
- **गीले कपड़े का प्रयोग**: दरवाजों और खिड़कियों के पास गीले कपड़े या चादरें लटकाएं। गीला कपड़ा हवा में मौजूद धूल के कणों को सोखने में मदद करता है।
- **मास्क पहनें** : घर से बाहर निकलते समय अच्छे गुणवत्ता वाला एंटी-पॉल्यूशन मास्क जरूर पहनें। यह श्वसन तंत्र को प्रदूषक कणों से बचाएगा।
- **आंखों की सुरक्षा**: आंखों में जलन और खुजली से बचने के लिए बाहर निकलते समय धूप का चश्मा या सुरक्षात्मक चश्मा जरूर पहनें। यह धूल और धुएं के कणों को आंखों तक पहुंचने से रोकता है।
- **हाथ धोना**: आंखों या चेहरे को छूने से पहले अपने हाथों को अच्छी तरह धो लें।
- **पौष्टिक आहार**: अपने आहार में विटामिन सी (जैसे नींबू, संतरा), ओमेगा-3 फैटी एसिड और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर फल और हरी सब्जियां शामिल करें, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं।

एक्यूआई बढ़ने से खतरे की घंटी बजी

पर्यावरण प्रदूषण के आंकड़ों पर नजर डालें तो कई दिन से वायु गुणवत्ता सूचकांक 300 के पार बना हुआ है। 25 अक्टूबर को एक्यूआई 370 दर्ज किया गया था, जो खराब स्थिति में आता है। वहीं, 24 अक्टूबर को यह 360 था।

पिछले वर्ष से 6 डिग्री तक गिरा तापमान

फतेहाबाद। इस बार मानसून के अंतिम दिनों तक फतेहाबाद व आसपास के जिलों में हुई भारी बरसात का असर अब देखा जा रहा है। बरसात के बाद मौसम ने ऐसी करवट ली कि नवम्बर में पडऩे वाली ठंड इस साल अक्टूबर में ही शुरू हो गई। अक्टूबर के पहले सप्ताह यहां हुई बारिश के बाद जहां एसी बंद हो गए वहीं दूसरे सप्ताह में गीजर चलने शुरू हो गए। अब हालात यह है कि बीते वर्ष से इस समय यहां का तापमान 6 डिग्री तक कम है। यानि इस बार सर्दी लंबे समय तक चलेगी। पिछले साल अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में दिन का तापमान 38 डिग्री के करीब रह रहा था मगर इस बार 32 से 34 डिग्री के आसपास तापमान घूम रहा है। 28 अक्टूबर 2024 को फतेहाबाद का पारा 38.6 डिग्री के करीब था जबकि इस साल 28 अक्टूबर को 30 से 32 डिग्री जाने की संभावना है। दरअसल पिछले साल अक्टूबर के अंतिम दिनों में फतेहाबाद व आसपास के जिले में गर्मी थी। हिसार मंडल का हाल यह था कि यहां पर तापमान 38 डिग्री के पार था। पिछले अक्टूबर के अंत तक हिसार में 41 डिग्री, सिरसा में 39.7, जींद में 39.2, रोहतक में 39, भिवानी में 39, अम्बाला में 37 तथा नारनौल में 38 डिग्री और फतेहाबाद में 37 डिग्री के आसपास घूमता रहा। इस साल मौसम का मिजाज पिछले साल की तुलना में 5 से 6 डिग्री कम है। बीते एक सप्ताह से पारा 32 डिग्री के आसपास घूम रहा है। अक्टूबर के अंतिम दिनों तक पारा 30 डिग्री के करीब आएगा। हालांकि रात का पारा अक्टूबर की शुरूआत में ही एक बार तो 16 डिग्री के करीब पहुंच गया था मगर बाद में ये 17 से 19 डिग्री तक भी छू गया था। अब वापस धीरे धीरे कम हो रहा है। 17 डिग्री के नीचे अभी नहीं पहुंचा है। बीती रात का पारा 17.2 डिग्री रिकार्ड किया गया जो सामान्य से 2 डिग्री ज्यादा है क्योंकि अक्टूबर के अंतिम समय में रात का पारा 16.4 डिग्री के करीब होना चाहिए। मौसम विभाग के मुताबिक रविवार से पूर्वी राजस्थान में एक हलका पश्चिमी विक्षोभ आएगा जिसका असर दो तीन जिलों तक रहेगा। दक्षिण हरियाणा में ये बेअसर रहेगा। बावजूद इसके अक्टूबर के अंतिम दिन तक रात का पारा 16 डिग्री के नीचे आने की संभावना है।

हवा दूषित होने से आ रही दिक्कत

हुडा सेक्टर स्थित सद्भावना अस्पताल के डॉ. अंशुल सहगल ने इस स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा है कि हवा दूषित होने के चलते लोगों में आंखों में जलन की समस्याएं आ रही है, जिसके कारण अस्पताल में मरीजों की संख्या में इजाफा हुआ है। उन्होंने बताया कि प्रदूषण से प्रभावित लोगों के लिए विशेष परामर्श व्यवस्था शुरू की गई है ताकि समय पर इलाज मिल सके और गंभीर बीमारियों से बचाव किया जा सके।

- डॉ. अंशुल सहगल

सीआईए रतिया ने की कार्रवाई

नशा तस्करी मामले में मुख्य सप्लायर महिला गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

■ 12 किलो 120 ग्राम डोडापोस्त मिलने पर हुई कार्रवाई

नशा तस्करों पर नकेल कसते हुए सीआईए रतिया पुलिस ने एक महिला को गिरफ्तार किया है। मुख्य सप्लायर महिला की पहचान मंजीत कौर उर्फ रानी पत्नी गुरुचरण सिंह निवासी तामसपुरा के रूप में हुई है। इस मामले में एक अन्य आरोपी को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है।

सीआईए रतिया प्रभारी सहायक उपनिरीक्षक रिछपाल ने बताया कि यह कार्रवाई 4 मार्च को दर्ज एनडीपीएस एक्ट के तहत मामले में की गई है। इस मामले में सीआईए टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर गांव तामसपुरा में छापेमारी कर आरोपी गुरबख्शीश सिंह उर्फ गौरु पुत्र बेअंत सिंह के मकान से 12 किलो 120 ग्राम कचरा डोडा पोस्त बरामद किया था। तलाशी लेने पर घर के एक कमरे में रखे लोहे के संदूक से सफेद प्लास्टिक कट्टे में यह नशीला पदार्थ बरामद हुआ। आरोपी से पूछताछ में सामने आया कि उक्त नशीला पदार्थ मंजीत कौर उर्फ रानी द्वारा सप्लाई किया गया था। जांच के आधार पर मुख्य सप्लायर की पहचान होने पर सीआईए रतिया टीम ने मंजीत कौर उर्फ रानी को गिरफ्तार किया। पूछताछ के दौरान आरोपी ने सप्लाई नेटवर्क के बारे में कुछ अहम जानकारियां साझा की हैं, जिनकी पुष्टि हेतु आगे जांच जारी है।

टोहाना पुलिस का नशा तस्करों पर शिकंजा

डोडापोस्त सहित दो अंतरराज्यीय नशा तस्करों को किया काबू

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

सीआईए टोहाना की टीम ने कचरा डोडा पोस्त सहित दो अंतरराज्यीय नशा तस्करों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान वंशप्रीत उर्फ अंश और आकाशदीप उर्फ आकाश निवासी कुंदनी हेड, जिला फतेहाबाद के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपियों से बरामद प्लास्टिक कट्टे में भरा डोडापोस्त तथा बिना नंबर प्लेट की मोटरसाइकिल को भी जब्त किया है। सीआईए प्रभारी उपनिरीक्षक अशोक कुमार ने बताया कि गश्त के दौरान बिना नंबर प्लेट की मोटरसाइकिल पर सवार दो युवक दिखाई दिए। उनके पास से 4.560 किलोग्राम कचरा डोडापोस्त बरामद हुआ। इस पर पुलिस ने दोनों युवकों को गिरफ्तार कर थाना जाखल में इनके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है। दोनों युवकों से पूछताछ जारी है, ताकि नशे की सप्लाई चेन और अन्य आरोपियों का खुलासा हो सके।

बुखार से बच्ची की मौत, गांवों में दवा छिड़काव के निर्देश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| ओढां

ओढां में दस वर्षीय बच्ची की बुखार के कारण मौत हो गई। इकबाल खान की दस वर्षीय बेटी फिजा खान को वीरवार को अचानक बुखार हो गया। परिजन उसे ओढां के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में लेकर गए। वहां पर लड़की को दाखिल करने के कुछ देर बाद ही बुखार तेज हो गया और वह बेहोश हो गई। काफी देर तक उपचार किए जाने के बावजूद उसके स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हुआ। इसके बाद चिकित्सकों ने उसे सिरसा रेफर कर दिया। परिजन फिजा को सरकारी अस्पताल की बजाय सिरसा के एक निजी अस्पताल में ले गए। उपचार के दौरान फिजा को दौरे पड़ने शुरू हो गए। उसे खून की उल्टी भी आनी शुरू हो गई। चिकित्सक ने उसे अग्रोहा मेडिकल कॉलेज के लिए रेफर दिया। मेडिकल कॉलेज में बच्ची को इमरजेंसी में दाखिल कर उपचार शुरू किया गया। लेकिन उपचार के दौरान बच्ची ने दम तोड़ दिया। परिजनों के मुताबिक बच्ची को कभी दौरे नहीं पड़ते थे, लेकिन बुखार आने के बाद उसे दौरे पड़ने शुरू हो गए। फिजा इकबाल की इकलौती बेटी थी, जिसको उसने गोद लिया हुआ था।

फॉगिंग करवाई गई

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ओढ़ा के वरिष्ठ चिकित्सका अधिकारी डॉ सुमित जैन का कहना है कि जब लड़की को अस्पताल में लाया गया तो उसको करीब 107 डिग्री बुखार था। डॉक्टर ने करीब डेढ़ घंटे तक उपचार किया लेकिन जब बच्ची के स्वास्थ्य में सुधार नहीं हुआ तो उसे नागरिक अस्पताल सिरसा रेफर कर दिया। बच्ची को 4-5 दिनों से बुखार था। अस्पताल परिसर में फॉगिंग करवा दी है और ओढ़ा सहित कई गांवों के सरपंचों को छिड़काव के लिए दवाई दे दी है। इस समय अस्पताल में बुखार से पीड़ित 10-15 मरीज एडमिट है।

बाइक के आगे पशु आने से बाइक सवार की मौत

सिरसा। कालांवली थाना क्षेत्र के गांव तख्तमल के समीप बाइक के आगे अचानक बेसहारा पशु आने से मोटरसाइकिल सवार 23 वर्षीय युवक की मौत हो गई। मृतक युवक की पहचान दिलप्रीत खान निवासी गांव केवल के रूप में हुई है। कालांवाली पुलिस भी मौके पर पहुंची ओर घटना की जानकारी ली।

बताया जा रहा है कि मृतक युवक दिलप्रीत कालांवाली में एक कपड़े की दुकान पर काम करता था कि बीती रात्रि को करीब नौ बजे वह कालांवाली से गांव केवल जा रहा था कि गांव के पास अचानक बाइक के आगे बेसहारा पशु आने से वह गंभीर रूप से घायल हो गया। राहगीरों ने उसे कालांवाली सीएचसी में दाखिल करवाया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। वह अपने माता पिता का इकलौता बेटा था, उसकी एक बड़ी बहन है जोकि विवाहित है। कालांवाली पुलिस मामले में कार्रवाई कर रही है।

अभियान | छेड़छाड़ वाले हॉटस्पॉट पर महिला पुलिस ने डिकॉय बन रखी नजर

मनचलों पर लगाम कसने के लिए जिला पुलिस ने चलाया विशेष अभियान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

महिलाओं की सुरक्षा को लेकर महिला पुलिस टीम द्वारा विशेष डिकॉय चेकिंग अभियान चलाया गया। इस अभियान का उद्देश्य सार्वजनिक स्थलों पर महिलाओं, छात्राओं और बालिकाओं के प्रति असभ्य व्यवहार करने वाले मनचलों और हुड़दंगबाजों पर सख्त कार्रवाई करना रहा। पुलिस चौकी नागपुर में तैनात महिला एएसआई सुमन के नेतृत्व में, पुलिस टीम ने क्षेत्र के हॉटस्पॉट स्थलों, बस अड्डों, स्कूलों और बाजारों के आस-पास विशेष चेकिंग अभियान चलाया। टीम ने डिकॉय ऑपरेशन के तहत भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में निगरानी रखी और ऐसे युवकों की पहचान की जो महिलाओं से छेड़छाड़, फब्तियां कसने या असभ्य आचरण में लिप्त पाए गए। अभियान के दौरान कई स्थानों पर पुलिस ने गश्त बढ़ाई और संदिग्ध व्यक्तियों की तलाशी व पूछताछ भी की। मौके पर टीम ने स्थानीय लोगों को भी जागरूक किया कि वे किसी भी प्रकार की अशोभनीय हरकत या उत्पीड़न की घटना देखें तो तुरंत पुलिस को सूचना दें।

फतेहाबाद। छात्राओं से बातचीत करती महिला पुलिस कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

सख्त कानूनी कार्रवाई की दी चेतावनी

महिला एएसआई सुमन ने बताया कि इस डिकॉय चेकिंग अभियान का उद्देश्य महिलाओं को सुरक्षित माहौल प्रदान करना और ऐसे असामाजिक तत्वों को यह संदेश देना है कि फतेहाबाद पुलिस महिलाओं की सुरक्षा के प्रति पूरी तरह सजग है। जो भी व्यक्ति सार्वजनिक स्थलों पर अनुशासनहीनता जैसे कार्यों में संलिप्त पाया जाएगा, उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

महिला कॉलेजों व स्कूलों में रही तैनाती

उन्होंने यह भी बताया कि अभियान के दौरान कई महिला कॉलेजों और स्कूलों के बाहर पुलिस की उपस्थिति दर्ज करवाई गई, ताकि छात्राओं को सुरक्षा का भरोसा मिल सके। साथ ही, टीम ने क्षेत्र की महिलाओं को महिला हेल्पलाइन नंबर 1091, साइबर हेल्पलाइन 1930 और 112 इमरजेंसी नंबर की जानकारी भी दी। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन ने कहा कि फतेहाबाद पुलिस महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और स्वाभिमान के लिए लगातार प्रयासरत है। जिले में समय-समय पर ऐसे डिकॉय चेकिंग अभियान, स्कूल-कॉलेज विजिट और जन-जागरूकता कार्यक्रम जारी रहेंगे ताकि हर महिला निडर होकर अपने कार्य और शिक्षा में आगे बढ़ सके।

ईपीएस के 10 साल पूरे होने से पहले सारे ही पैसे निकालना कितना सही

अपडेट | बिजनेस डेस्क

- पहले सारा पैसा निकालने पर नहीं मिलती मासिक पेंशन, पेंशन के लिए लगातार दस ईपीएस का हिस्सा रहना जरूरी
- ईपीएस मेंबर को 36 महीने के भीतर दोबारा नौकरी मिल जाती है, तो उसकी ईपीएस मेंबरशिप और पेंशन एलिजिबिलिटी बनी रहेगी

अगर आप नौकरीपेशा हैं और ईपीएफ (ईपीएम) में योगदान करते हैं, तो आपके वेतन का एक हिस्सा ईपीएस यानी एंप्लाइज पेंशन स्कीम में भी जाता है। बहुत से लोग यह सोचते हैं कि नौकरी छोड़ने या बीच में ब्रेक आने पर इस पैसे को फौरन निकाल लेना बेहतर है, लेकिन क्या वाकई ईपीएस के 10 साल पूरे होने से पहले सारे पैसे निकाल लेना सही फैसला है? कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने हाल ही में ईपीएस से जुड़े कुछ बदलाव किए हैं, हालांकि, इन बदलावों का असर पेंशन पाने की उम्र यानी 58 साल की एलिजिबिलिटी पर नहीं पड़ेगा। पेंशन पाने के लिए किसी सदस्य का कम से कम 10 साल तक लगातार ईपीएस का हिस्सा रहना जरूरी है। अगर किसी सदस्य की नौकरी चली जाती है और वह ईपीएस (ईपीएस) के लिए योगदान जारी नहीं रखना चाहता, तो वह 10 साल पूरे होने से पहले अपने सारे पैसे निकाल सकता है. पहले यह फाइनल सेटलमेंट नौकरी चले जाने के 2 महीने बाद किया जा सकता था, लेकिन अब इसके लिए 2 महीने नहीं, बल्कि 36 महीने यानी 3 साल तक इंतजार करना होगा, यानी ईपीएफओ ने अब ईपीएस के पैसे निकालना पहले की तुलना में ज्यादा मुश्किल बना दिया है, इस बदलाव का उद्देश्य यह है कि अगर ईपीएस मेंबर को 36 महीने के भीतर दोबारा नौकरी मिल जाती है, तो उसकी ईपीएस मेंबरशिप और पेंशन एलिजिबिलिटी बनी रह सके।

10 साल से पहले पैसे निकालने का असर

ईपीएफओ के नियमों के मुताबिक आप लगातार नौकरी के 10 साल पूरे होने से पहले ईपीएस से पैसे निकाल सकते हैं। लेकिन ऐसा करने पर आप आगे चलकर मिलने वाली पेंशन के लिए एलिजिबल नहीं रह जाएंगे। यानी रिटायरमेंट के बाद ईपीएस के जरिये मिलने वाली मंथली पेंशन की सुविधा खत्म हो जाएगी।ईपीएफओ के अनुसार रिटायरमेंट के समय पेंशन पाने की एलिजिबिलिटी के लिए किसी सदस्य का कम से कम 10 साल तक ईपीएस में सदस्य रहना जरूरी है। इसका मतलब यह है कि जल्दबाजी में पैसे निकालने से आप अपनी लंबी अवधि की आर्थिक सुरक्षा खो सकते हैं।

क्या कहते हैं आंकड़े

दिलचस्प बात यह है कि ईपीएफओ के आंकड़ों के मुताबिक करीब 75 प्रतिशत सदस्य 4 साल की सर्विस के भीतर ही पूरा पेंशन अमाउंट निकाल लेते हैं, ऐसे में उन्हें भविष्य की पेंशन और आर्थिक सुरक्षा का लाभ नहीं मिल पाता है।

फैमिली पेंशन का भी नुकसान

अगर कोई सदस्य 10 साल से पहले पैसे नहीं निकालता है और उसका निधन हो जाता है, तो उसके परिवार को अगले 3 साल तक पेंशन का लाभ मिलता है, लेकिन अगर सदस्य ने पूरे पैसे निकाल लिए हैं, तो परिवार यह लाभ नहीं ले सकता। यही वजह है कि ईपीएफओ ने ईपीएस की सदस्यता को 10 साल पूरे होने तक जारी रखने के लिए नियमों में बदलाव किए हैं। ईपीएफओ का कहना है कि ईपीएस के पैसे निकालने के लिए दो महीने की जगह 36 महीने इंतजार करने का नया प्रावधान इसीलिए लाया गया है ताकि सदस्यों की 10 साल की एलिजिबिलिटी पूरी हो जाए और उनके परिवार को भी पेंशन का लाभ मिल सके।

किन हालात में निकाल सकते हैं पैसे

हालांकि कुछ खास परिस्थितियों में पैसे निकालने का फैसला सही भी हो सकता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी व्यक्ति की आमदनी अच्छी खासी है या उसने पहले से अपनी रिटायरमेंट प्लानिंग की हुई है, जिसके चलते वह रिटायरमेंट के बाद रेगुलर इनकम या फेमिली पेंशन पाने के लिए ईपीएस के भरोसे नहीं है, तो जरूरत पड़ने पर अपने पैसे निकाल सकता है। लेकिन जिनकी आय सीमित है और दूसरा कोई रिटायरमेंट प्लान नहीं है, तो उनके लिए ईपीएस को जारी रखना भविष्य की सुरक्षा के लिहाज से बेहतर विकल्प है। ईपीएस पेंशन स्कीम लंबे समय तक आर्थिक सुरक्षा देने के लिए बनाई गई है। अगर आप 10 साल पूरे होने से पहले पैसा निकालते हैं, तो भविष्य में पेंशन नहीं मिलेगी। साथ ही फेमिली पेंशन के तौर पर परिवार को मिलने वाली सुरक्षा का लाभ भी चला जाएगा। इसलिए नौकरी में ब्रेक या अस्थायी परेशानी की हालत में जल्दबाजी करने की बजाय सोच-समझकर फैसला करने में ही समझदारी है।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- यह दूसरी करेंसीज में इनवेस्ट करने वालों के लिए और अट्रैक्टिव हो जाता है
- पहले निवेशक पूरे पोर्टफोलियो की तुलना में 10 से 12% पैसा सोने में निवेश करते थे
- अब बाजार की तेजी को देखते हुए निवेशक 18 से 22% सोने में निवेश करने लगे

गोल्ड और अमेरिकी डॉलर के बीच दिलचस्प संबंध देखने को मिला
जब डॉलर में कमजोरी आती है तो गोल्ड की चमक बढ़ती जाती है

सोने में निवेश सबसे सुरक्षित, लेकिन जरूरत से ज्यादा भी ठीक नहीं

सोने को शुरू से ही निवेश का सबसे सुरक्षित माध्यम माना जाता रहा है। इसने निवेशकों को कभी रुसवा नहीं किया। पिछला रिकॉर्ड देखा जाए तो सोने ने कभी भी निगेटिव रिटर्न नहीं दिया। यह चाहे किसी भी रूप में हो निवेशकों को मालामाल करता रहा है। हालांकि बाजार के जानकारों का कहना है कि सोने में निवेश करना सही है, लेकिन यह जरूरत से ज्यादा नहीं होना चाहिए। हाल फिलहाल में सोने में हुई बढ़ोतरी को देखते हुए निवेशकों ने अपने पोर्टफोलियो में इसकी हिस्सेदारी बढ़ा दी है। पहले निवेशक पूरे पोर्टफोलियो की तुलना में 10 से 12 फीसदी पैसा सोने में निवेश करते थे, लेकिन अब निवेशक 18 से 22 फीसदी सोने में निवेश करने लगे हैं। यहां तक तो ठीक हैं, लेकिन इससे अधिक रिस्की हो सकता है। इस साल आई जबर्दस्त तेजी की वजह से सोना चर्चा में है। 21 अक्टूबर को 5 फीसदी की गिरावट के बावजूद गोल्ड ने निवेशकों को मालामाल किया है। सवाल है कि आखिर गोल्ड में इतनी तेजी की क्या वजह है? इस सवाल का जवाब पाने के लिए हमें ग्लोबल इकोनॉमी में गोल्ड की भूमिका को समझना होगा।

1944 का ब्रेटन वुड्स एग्रीमेंट

सेकेंड वर्ल्ड वॉर के बाद 1944 में ब्रेटन वुड्स एग्रीमेंट हुआ। तब अमेरिकी डॉलर में दुनिया के दूसरे देशों की करेंसीज की कीमत तय करने पर सहमति बनी। डॉलर की कीमत गोल्ड पर आधारित थी। 35 डॉलर एक औंस सोने के बराबर था। इस व्यवस्था से ग्लोबल इकोनॉमी को तब स्थिरता मिली, जब उसे इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। लेकिन, अमेरिकी इकोनॉमी का आकार बढ़ने पर सरकार ने ज्यादा डॉलर छापे। एक समय ऐसा आया जब कुल डॉलर का मूल्य गोल्ड रिजर्व से ज्यादा हो गया।

1960 के दशक में एक कमोडिटी के रूप में उभरा गोल्ड

1960 का दशक आते-आते इस असंतुलन की अनदेखी करना मुश्किल हो गया। 1971 में अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन ने एक बड़ा कदम उठाया। उन्होंने डॉलर को गोल्ड में बदलने की सुविधा बंद कर दी, जिससे ब्रेटन वुड्स सिस्टम खत्म हो गया। इससे मॉनेटरी सिस्टम में गोल्ड की तय भूमिका खत्म हो गई। इसके बाद गोल्ड एक कमोडिटी बनकर रह गया। इसकी कीमतों पर मार्केट फोर्सेज का असर पड़ना शुरू हो गया, लेकिन, निवेश के सुरक्षित विकल्प को लेकर इसकी भूमिका बनी रही।

केंद्रीय बैंकों ने समझा गोल्ड का महत्व

जैसे-जैसे डॉलर कमजोर होता गया और इनफ्लेशन बढ़ता गया, वैसे-वैसे गोल्ड की अपील बढ़ती गई। जब कभी डॉलर में बड़ी कमजोरी आई या इनफ्लेशन में उछाल आया, गोल्ड निवेश के भरोसेमंद जरिया के रूप में सामने आता रहा। क्राइसिस के समय भी इसकी चमक बनी रही। इससे यह माना गया कि जब सबकुछ अनिश्चित दिख रहा तो तब भी गोल्ड में वेल्थ

की वैल्यू घटने से बचाने की क्षमता है। इसके बाद दुनिया के केंद्रीय बैंकों ने गोल्ड खरीदना शुरू कर दिया। इसका मकसद विदेशी मुद्रा भंडार का डायवर्सिफिकेशन था।

गोल्ड में तेजी की बड़ी वजहें

बीते कुछ सालों में गोल्ड और अमेरिकी डॉलर के बीच दिलचस्प संबंध देखने को मिला है। जब डॉलर में कमजोरी आती है तो गोल्ड की चमक बढ़ती है। इससे यह दूसरी करेंसीज में इनवेस्ट करने वाले इनवेस्टर्स के लिए और अट्रैक्टिव हो जाता है। बॉन्ड्स की रियल यील्ड ने भी इसमें अहम भूमिका निभाई। जब रियल यील्ड घट जाती है तो गोल्ड की अपील बढ़ जाती है। जब हम साल 2025 के अंत के करीब है, गोल्ड 4000 डॉलर प्रति औंस से ऊपर है। गोल्ड की तेजी में डॉलर में कमजोरी, बॉन्ड्स की कम रियल यील्ड और सेंट्रल बैंकों के बीच गोल्ड की ज्यादा डिमांड का हाथ है। इसके अलावा जियोपॉलिटिकल टेंशन का असर भी इसमें शामिल है।

इकोनॉमी में गोल्ड की बढ़ती भूमिका

गोल्ड में तेजी न सिर्फ इनवेस्टर्स के लिए अहम है बल्कि इसका आर्थिक महत्व भी है। उदाहरण के लिए भारत में आरबीआई के रिजर्व में डॉलर के अलावा गोल्ड भी है। जब गोल्ड में तेजी आती है तो आरबीआई के डॉलर रिजर्व की वैल्यू बढ़ जाती है। इससे इंडिया की फाइनेंशियल पोजीशन मजबूत होती है। गोल्ड का असर भारत में कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स (सीपीआई) पर भी पड़ता है। उदाहरण के लिए सितंबर 2025 में गोल्ड की ज्यादा कीमतों की वजह से इंडिया के कोर इनफ्लेशन में मामूली उछाल देखने को मिला, जबकि फूड की कीमतों में गिरावट आई। इससे पता चलता है कि गोल्ड की भूमिका इकोनॉमी में कितनी ज्यादा है।

गोल्ड में तेजी जारी रहने की उम्मीद

गोल्ड में तेजी जारी रहने की उम्मीद है। इसकी कई वजहें हैं। रियल यील्ड लगातार कम बनी हुई है। सेंट्रल बैंक के बीच गोल्ड की डिमांड बनी हुई है, लेकिन, इतिहास यह बताता है कि ऐसी तेजी के बाद गोल्ड दोबारा नई ऊंचाई पर पहुंचने से पहले कंसॉलिडेशन फेज में रहता है। इसलिए गोल्ड में तेजी जारी रहने की संभावना है, लेकिन इनवेस्टर्स को इसमें उतार चढ़ाव के लिए तैयार रहना चाहिए।

एक सीमा से ज्यादा निवेश सही नहीं

कई इनवेस्टर्स इनफ्लेशन से बचाव, करेंसी में कमजोरी और ग्लोबल इकोनॉमी में अनिश्चितता को देखते हुए गोल्ड में निवेश कर रहे हैं। लेकिन, गोल्ड में बहुत ज्यादा निवेश से आपके पोर्टफोलियो पर इसकी कीमतों में तेजी या कमजोरी का असर पढ़ना शुरू हो जता है। ऐसे में बॉन्ड बड़ा रोल निभाता है। अनिश्चित समय में तो गोल्ड का प्रदर्शन अच्छा रहता है लेकिन, जब सबकुछ ठीक चल रहा होता है तो क्या होता है? बॉन्ड्स पोर्टफोलियो में स्टैबिलिटी लाता है। साथ ही इंटरेस्ट के रूप में इससे रेगुलर इनकम होती है। यह फायदा गोल्ड में नहीं है। ऐसे इनवेस्टर्स जिन्हें रेगुलर कैश की जरूरत पड़ती है, उनके डायवर्सिफायड पोर्टफोलियो में बॉन्ड्स का होना जरूरी है।

ऑफर देखकर न ललचाएं ज्यादा जरूरत होने पर ही पर्सनल लोन उठाएं, वरना यह बढ़ा सकता है परेशानी

पर्सनल लोन एग्रीमेंट पर साइन से पहले चेक करें कुछ बातें, वरना पड़ेगा पछताना

बैंक और एनबीएफसी लोन एग्रीमेंट में कई ऐसी शर्तें जोड़ देते हैं जो करती हैं परेशान, ऐसे में ऐसी शर्तों पर पहले से ही नजर दौड़ा लें, दिक्कत नहीं होगी

अलर्ट | बिजनेस डेस्क

कई बार हमें अचानक पैसों की जरूरत पड़ जाती है चाहे मेडिकल इमरजेंसी हो, शादी का खर्च या फिर किसी जरूरी ट्रिप का खर्चा। ऐसे में पर्सनल लोन एक आसान रास्ता लगता है। कुछ क्लिक या एक फॉर्म भरकर पैसा खाते में आ जाता है, लेकिन यही आसानी कई बार बाद में परेशानी का कारण भी बन जाती है, अगर आपने लोन एग्रीमेंट के कागजों को ध्यान से नहीं पढ़ा। बैंक और एनबीएफसी लोन एग्रीमेंट में कई ऐसी शर्तें जोड़ देते हैं, जिन पर नजर न गई तो बाद में पछताना पड़ सकता है।

प्रीपेमेंट और फोरक्लोजर चार्जेज

कई लोग सोचते हैं कि लोन जल्दी चुका देंगे तो ब्याज बच जाएगा, लेकिन हर बैंक या फाइनेंशियल इंस्टिट्यूशन इसकी इजाजत नहीं देता। अगर आप लोन तय समय से पहले चुका देते हैं, तो आपको प्रीपेमेंट या फोरक्लोजर चार्जेज देने पड़ सकते हैं, जो आम तौर पर बाकी बचे लोन अमाउंट का 2% से 5% तक होता है। इसलिए साइन करने से पहले यह जरूर समझ लें कि आपका बैंक या एनबीएफसी पर्सनल लोन जल्दी चुकाने पर कितने चार्जेज वसूलेगा।

लेट पेमेंट और डिफॉल्ट पेनॉल्टी

एक भी ईएमआई छूटना आपके क्रेडिट स्कोर को नुकसान पहुंचा सकता है, लेकिन इसके साथ ही, बैंक लेट पेमेंट पर पेनाल्टी चार्ज भी वसूलते हैं। कुछ बैंक एक तय रकम लेते हैं, तो कुछ बाकी बचे ईएमआई अमाउंट का एक प्रतिशत। यही वजह

है कि देर से भुगतान करने पर ब्याज से ज्यादा रकम चुकानी पड़ सकती है। इससे बचने का सबसे आसान तरीका है ऑटो डेबिट ऑर्डर लगाना, ताकि ईएमआई समय पर कट जाए।

छिपे हुए प्रोसेसिंग व सर्विस चार्जेस

बैंक जब लोन का ब्याज दर बताते हैं, तो वह तो साफ होता है, लेकिन बाकी के चार्जेस अक्सर ध्यान नहीं जाते। जैसे प्रोसेसिंग फीस, डॉक्युमेंटेशन फीस और जीएसटी आदि। यहां तक कि कुछ बैंक फोरक्लोजर लेटर या लोन स्टेटमेंट के लिए भी शुल्क वसूलते हैं। इसलिए हमेशा साइन करने से पहले बैंक से यह पूछें कि कुल मिलाकर आपकी जेब से कितनी रकम कटेगी। आखिरकार, जो लोन अमाउंट आपको मिलेगा, वह इन चार्जेस के बाद थोड़ी कम ही होगी।

ब्याज दर में बदलाव से जुड़ी शर्तें

अगर आपने फ्लोटिंग रेट वाला पर्सनल लोन लिया है, तो यह समझना जरूरी है कि ब्याज दर में बदलाव कब और कैसे होगा। कुछ बैंक हर तिमाही में रेट बदलते हैं, तो कुछ साल में एक बार. अगर ब्याज दरें बढ़ती हैं तो आपकी ईएमआई भी बढ़ सकती है। इसलिए एग्रीमेंट में दिए गए इस क्लॉज को जरूर पढ़ें ताकि बाद में बढ़ी हुई किस्त देखकर झटका न लगे।

बीमा और क्रॉस-सेलिंग की चाल

कई बैंक पर्सनल लोन के साथ एक बीमा पॉलिसी भी जोड़ देते हैं, जो बेरोजगारी, बीमारी या मृत्यु की स्थिति में लोन को कवर करती है। सुनने में यह सुरक्षा जैसा लगता है, लेकिन अक्सर यह बीमा वैकल्पिक होता है. कुछ बैंक इसे अनिवार्य बताकर जोड़ देते हैं। इसलिए साइन करने से पहले यह साफ कर लें कि क्या यह बीमा जरूरी है, और क्या उसकी प्रीमियम लागत वाजिब है।

हर शर्त को समझना बेहद जरूरी

पर्सनल लोन एक सुविधाजनक विकल्प जरूर है, लेकिन इसके साथ जुड़ी हर शर्त को समझना बेहद जरूरी है। छोटी-छोटी बातों पर ध्यान न देने से बाद में भारी ब्याज, चार्जेस या अन्य पेनाल्टी झेलनी पड़ सकती है। इसलिए अगली बार जब भी आप किसी लोन डॉक्यूमेंट पर साइन करें, तो जल्दबाजी न करें। हर पेज, हर क्लॉज को ध्यान से पढ़ें और समझें। आखिरकार, लोन से राहत तभी मिलेगी जब आप इसके हर नियम को समझदारी से निभाएंगे।

घर में कितनी रख सकते हैं चांदी कमाई पर कैसे लगता है टैक्स

बिजनेस डेस्क

निवेश की दुनिया में सोना के साथ एक और एसेट क्लास सबसे ज्यादा चर्चा में है, जो है चांदी। वजह इसमें मिल रहा सुपर रिटर्न। साल 2025 में रिटर्न के मामले में चांदी ने सोने को पीछे छोड़ दिया है। इस साल चांदी का रिटर्न 73फीसदी से अधिक रहा है। इससे निवेशकों के बीच चांदी की डिमांड बढ़ रही है, चाहे वह किसी भी फॉर्मेट में हो। तो यहां 2 बातें समझ लेना जरूरी है कि आप अपने घर में अधिक से अधिक कितना चांदी रख सकते हैं, ताकि इनकम टैक्स डिपार्टमेंट का कोई झंझट न हो। वहीं इससे होने वाली कमाई पर कितना टैक्स लगता है।

चांदी रखने पर लिमिट नहीं

सोने की तरह, चांदी (जैसे सिक्के, गहने, बर्तन आदि) रखने पर इनकम टैक्स एक्ट, 1961 के तहत कोई सीमा तय नहीं की गई है। अगर चांदी कानूनी तरीके से खरीदी गई या विरासत में मिली है, तो उस पर कोई रोक नहीं है। टैक्स तभी लगता है जब आप चांदी बेचते हैं और उस पर कैपिटल गेंस (लाभ) कमाते हैं। टैक्स सिर्फ बिक्री पर या छुपाई गई संपत्ति पाए जाने पर लगता है। हालांकि घर पर कितनी भी चांदी रखने की सीमा नहीं है, लेकिन अगर आपके पास ज्यादा चांदी है, तो उसकी खरीद के प्रमाण (बिल या रसीद) संभाल कर रखना बेहतर है। अगर आपने चांदी किसी ज्वेलर, डीलर या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से खरीदी है, तो उसका असली बिल जरूर रखें। भविष्य में अगर कभी इनकम टैक्स विभाग जांच करता है, तो ये दस्तावेज आपके लिए सुरक्षा कवच बन सकते हैं।

चांदी की कमाई पर टैक्स

चांदी पर टैक्स के नियम की बात करें तो यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने फिजिकल सिल्वर (जैसे गहने, सिक्के, बार) खरीदी है या सिल्वर ईटीएफ या सिल्वर म्यूचुअल फंड में निवेश किया है, और आपने इसे कितने समय तक रखा है. इसलिए, टैक्स के नियम समझना जरूरी है ताकि आप सही निवेश निर्णय ले सकें।

फिजिकल फार्म में चांदी पर टैक्स

अगर आपने चांदी के गहने या सिक्के को 24 महीने से पहले बेच दिया, तो उस पर हुआ लाभ शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेंस (एसटीसीजी) माना जाएगा और यह आपकी इनकम टैक्स स्लैब की दर के अनुसार टैक्स होगा, लेकिन आपने चांदी को 24 महीने से ज्यादा समय तक रखा, तो यह लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेंस (एलटीसीजी) माना जाएगा। अगर चांदी 23 जुलाई 2024 या उसके बाद खरीदी गई है, तो इस पर 12.5% टैक्स लगेगा और इंडेक्सेशन का लाभ नहीं मिलेगा। वहीं 23 जुलाई 2024 से पहले खरीदी चांदी पर 20% लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेंस टैक्स लगेगा इंडेक्सेशन के साथ।

सिल्वर म्यूचुअल फंड और ईटीएफ पर टैक्स

अगर आपने सिल्वर ईटीएफ या म्यूचुअल फंड को 12 महीने के अंदर बेचा, तो यह एसटीसीजी माना जाएगा और इनकम टैक्स स्लैब रेट के हिसाब से टैक्स लगेगा। अगर 12 महीने से बाद बेचा, तो यह एलटीसीजी माना जाएगा और 12.5% टैक्स लगेगा, बिना इंडेक्सेशन बेनेफिट के।

चांदी की ज्वेलरी, बिस्कुट और सिक्कों पर टैक्स

चांदी (बार, सिक्के या गहने) के मूल्य पर 3 फीसदी जीएसटी लगता है, जबकि गहनों के मेकिंग चार्ज पर 5 फीसदी जीएसटी लगाया जाता है।

यूपीआई पेमेंट के लिए अपने लिक्विड म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल कर सकेंगे

यूपीआई के 'पे विद म्यूचुअल फंड' के जरिये भी कर सकेंगे पेमेंट

जानकारी | बिजनेस डेस्क

अब तक आपने म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल सिर्फ निवेश और रिटर्न कमाने के लिए किया होगा, लेकिन अब इसका इस्तेमाल पेमेंट करने में भी किया जा सकेगा। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) के नए फीचर 'पे विद म्यूचुअल फंड' के जरिये अब निवेशक यूपीआई पेमेंट के लिए अपने लिक्विड म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल कर सकेंगे। यह फीचर न सिर्फ इस्तेमाल में आसान है, बल्कि निवेशकों को बेहतर रिटर्न के साथ फ्लेक्सिबल कैश मैनेजमेंट का मौका भी देता है। यूपीआई के 'पे विद म्यूचुअल फंड' इस फीचर के जरिए आप अपनी लिक्विड म्यूचुअल फंड होल्डिंग से सीधे यूपीआई पेमेंट कर पाएंगे। मिसाल के तौर पर अगर आपने किसी फंड हाउस के लिक्विड फंड में निवेश किया है, और वह फंड इस सुविधा को सपोर्ट करता है, तो आप अपने उस निवेश का इस्तेमाल यूपीआई के जरिये किसी पेमेंट के लिए कर पाएंगे। जैसे ही आप यूपीआई से पेमेंट करेंगे, उतनी रकम के बराबर यूनिट्स अपने आप रिडीम हो जाएंगी और पैसे फौरन ट्रांसफर हो जाएंगे। इसे इस तरह समझिए कि यह फीचर लिक्विड म्यूचुअल फंड को एक मिनी बैंक अकाउंट की तरह काम करने की क्षमता देता है, लेकिन फर्क यह है कि यहां आपका पैसा बेहतर मार्केट-लिंक्ड रिटर्न भी कमा रहा होता है। इस सुविधा को फिलहाल आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड

क्यों खास है यह फीचर

लिक्विड फंड शॉर्ट-टर्म मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करते हैं, जिनकी लिक्विडिटी बहुत ज्यादा होती है। ऐसे में जब जरूरत पड़े, तो निवेशक फौरन पैसे निकाल सकते हैं। अब 'पे विद म्यूचुअल फंड' फीचर से यह प्रॉसेस और आसान हो गई है, क्योंकि अब आपको पहले पैसा बैंक अकाउंट में ट्रांसफर करने की जरूरत नहीं। इसके अलावा यह फीचर आपके निवेश पर फुल लिक्विडिटी के बावजूद सेविंग अकाउंट से ज्यादा संभावित रिटर्न का फायदा भी देता है। सेविंग अकाउंट में जहां आम तौर पर 4% से कम सालाना ब्याज मिल रहा है, वहीं लिक्विड फंड इस समय करीब 6-7% तक का रिटर्न दे रहे हैं। यानी आपका पैसा बेकार पड़े रहने की बजाय बेहतर रिटर्न भी दे सकता है और जरूरत पर फौरन काम भी आ सकता है।

ऐसे आसान होगा पेमेंट

यूपीआई आज हर रोजमर्रा के लेनदेन का हिस्सा बन चुका है। किराने की दुकान से लेकर ऑनलाइन शॉपिंग तक, हम सभी इसका इस्तेमाल करते हैं। अब अगर यह पेमेंट सीधे म्यूचुअल फंड से हो जाए, तो आपको अलग-अलग ऐप्स में ट्रांसफर या रिडेम्पशन की झंझट

- यह फीचर न सिर्फ इस्तेमाल में आसान है, बल्कि बेहतर रिटर्न के साथ फ्लेक्सिबल कैश मैनेजमेंट का मौका देगा
- जैसे ही यूपीआई से पेमेंट करेंगे, उतनी रकम के बराबर यूनिट्स अपने आप रिडीम हो जाएंगी
- पैसे फौरन ट्रांसफर हो जाएंगे,

नहीं झेलनी पड़ेगी। व्यक्तिगत निवेशकों के साथ-साथ छोटे बिजनेस के लिए भी यह फीचर बहुत मददगार साबित हो सकता है। वे अपने शॉर्ट-टर्म कैश को लिक्विड फंड में रखकर रिटर्न कमा सकते हैं और जरूरत पड़ने पर उसी से पेमेंट कर सकते हैं। यह कैश मैनेजमेंट का स्मार्ट और फ्लेक्सिबल तरीका है।

क्या यह सेविंग से बेहतर है?

कई मामलों में हां, लेकिन कुछ सावधानियां भी जरूरी हैं। सेविंग अकाउंट ज्यादा सुरक्षित होते हैं और उनमें 5 लाख रुपये तक के डिपॉजिट का इंश्योरेंस भी होता है। वहीं, लिक्विड फंड में थोड़ा मार्केट रिस्क रहता है. हालांकि यह रिस्क बहुत कम होता है, फिर भी अगर आपका लक्ष्य केवल सुरक्षा है, तो सेविंग अकाउंट ही बेहतर है।लेकिन अगर आप थोड़ा जोखिम लेने को तैयार हैं और चाहते हैं कि आपका पैसा फुल लिक्विडिटी के बावजूद बेहतर रिटर्न कमाए, तो नई सुविधा आपके लिए सही विकल्प हो सकती है। हां, यह ध्यान रखना जरूरी है कि आप जिस फंड में निवेश करें, उसकी लिक्विडिटी और रिडेम्पशन प्रोसेस भरोसेमंद हो।

यह फीचर एक स्मार्ट ऑप्शन

'पे विद म्यूचुअल फंड' फीचर निवेशकों के लिए सुविधा और रिटर्न दोनों को जोड़ता है। यह दिखाता है कि भारत में डिजिटल पेमेंट और लिक्विड म्यूचुअल फंड एक मिनी बैंक अकाउंट की तरह काम करेगा
- यहां आपका पैसा बेहतर मार्केट-लिंक्ड रिटर्न भी कमा रहा होता है,
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड और बजाज फिनसर्व एएमसी जैसे फंड हाउसेज ने लॉन्च किया

म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री कितनी तेजी से एक-दूसरे के करीब आ रही है। जो निवेशक अपने पैसों को हर वक्त रिटर्न के लिहाज से इनवेस्ट रखना चाहते हैं, उनके लिए यह फीचर एक स्मार्ट ऑप्शन बन सकता है। बशर्ते वे इसके फायदों और रिस्क को समझकर इसका इस्तेमाल करें।

अच्छी तरह समझने के बाद करें इस्तेमाल

भले ही यह फीचर बेहद सुविधाजनक है, लेकिन निवेशकों को इसका इस्तेमाल करने से पहले कुछ बातें जरूर समझ लेनी चाहिए। लिक्विड फंड के रिटर्न अलग-अलग फंड हाउस में अलग-अलग हो सकते हैं, इसलिए औसत रिटर्न और एक्सपेंस रेशियो पर नजर रखना चाहिए. साथ ही यह जानना भी जरूरी है कि "इंस्टैंट रिडेम्पशन" के साथ भी कुछ लिमिट्स या कट-ऑफ टाइम जुड़े हो सकते हैं। इसके अलावा, लिक्विड फंड से होने वाली कमाई पर टैक्स उसी तरह लगता है जैसे बैंक ब्याज पर. इसलिए इसे पूरी तरह इमरजेंसी फंड का विकल्प न मानें। अपने पैसे का कुछ हिस्सा हमेशा सेविंग अकाउंट में भी रखें ताकि किसी देरी की स्थिति में परेशानी न हो।

खबर संक्षेप

बैठक में स्वदेशी अपनाने का किया आह्वान

रतिया। भाजपा ओबीसी मोर्चा के जिलाध्यक्ष बलदेव सैनी ने रतिया विधानसभा के नागपुर मंडल व रतिया नगर मंडल की ओबीसी मोर्चा बैठक ली। इस दौरान मंडलाध्यक्ष अंकित सिंगला, ओबीसी मोर्चा मंडलाध्यक्ष सत्यनारायण जांगड़ा, नागपुर मंडलाध्यक्ष संदीप तथा ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष डॉ. मंगा राम ने उनका स्वागत किया। बलदेव सैनी ने कहा कि देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए हमें स्वदेशी वस्तुओं को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना चाहिए। सैनी ने बताया कि 31 अक्टूबर को लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर फतेहाबाद में रन फॉर यूनिटी मैराथन दौड़ का आयोजन किया जाएगा, जिसे मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। इस अवसर पर सुरेंद्र जांगड़ा, माखन जोइया, सुंदर जांगड़ा, कुलवंत सैनी वाइस चेयरमैन मार्केट कमेटी, रामकिशन गुज्जर, डॉ. सुभाष उपस्थित रहे।

बाइक चोरी का आरोपी बाइक सहित काबू

सिरसा। स्पेशल स्टाफ डबवाली व एवीटी स्टाफ ने बाइक चोरी के आरोपी को चोरीशुदा मोटरसाइकिल सहित गिरफ्तार किया है। स्पेशल स्टाफ व एवीटी प्रभारी रामफल ने बताया कि लादू राम पुत्र बाबू राम निवासी शेरगढ़ ने शिकायत दर्ज करवाई कि वह कर्ण ऑटो मोबाइल चौटाला रोड मंडी डबवाली में अपने निजी कार्य के लिए आया था। उसने अपना बाइक एजेंसी के सामने खड़ा किया। कुछ देर बाद जब वह बाहर आया तो उसे उसका बाइक गायब था। शिकायत के अनुसार शहर थाना में मामला दर्ज जांच शुरु की। उनकी टीम ने तत्परता से कार्रवाई करते हुए अपने महत्वपूर्ण गुप्त सुराग जुटाते हुए आरोपी को चोरीशुदा बाइक सहित काबू किया। आरोपी की पहचान गगनदीप उर्फ गग्गी पुत्र जगसीर सिंह निवासी सकता खेड़ा के रुप में हुई है।

विवाहिता से मारपीट व दहेज उत्पीड़न मामले में पति को किया गिरफ्तार

फतेहाबाद। विवाहिता से मारपीट एवं दहेज उत्पीड़न के एक मामले जाखल पुलिस ने आरोपी पति को गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए युवक की पहचान कुलवंत सिंह पुत्र कृपाल सिंह निवासी आहलूपुर, थाना सरदूलगढ़, जिला मानसा के रूप में हुई है। थाना जाखल प्रभारी उपनिरीक्षक सुरेश ने बताया कि यह मामला 28 जुलाई को दर्ज किया गया था। यह प्रार्थनापत्र कार्यालय सीजेएम गायत्री से जांच उपरांत थाना जाखल में प्राप्त हुआ था। शिकायतकर्ता सोमा कौर पुत्री मुख्तयार सिंह निवासी गांव लेहराथेह ने अपने पति कुलवंत सिंह फौजी, ससुर कृपाल सिंह, सास सिमर कौर, जेठ जगमोहन सिंह, जेठानी ममता व सुनीता बाई तथा अन्य के विरुद्ध दहेज की मांग पूरी न करने पर मारपीट, मानसिक व शारीरिक उत्पीड़न के गंभीर आरोप लगाए थे। आरोप है कि विवाह के कुछ समय बाद ससुराल पक्ष द्वारा 5 लाख रुपये नगद व एक बड़ी गाड़ी की मांग की गई और विरोध करने पर उसके साथ मारपीट कर जान से मारने की धमकियां दी गई।

मारपीट के मामले में चौथा आरोपी गिरफ्तार

सिरसा। सिविल लाइन थाना पुलिस ने मारपीट के मामले में चौथा आरोपी बबलू वासी गांव रिसालियाखेड़ा जिला सिरसा को गिरफ्तार कर लिया है। सिविल लाइन थाना प्रभारी प्रदीप कुमार ने बताया कि शिकायतकर्ता मोहम्मद फैज ने शिकायत की कि वह अपने कुछ साथियों के साथ देविवि में टेलेंट हंट कार्यक्रम में शामिल हुआ था। इसी दौरान तालियां व सीटियां बजाने को लेकर कुछ छात्रों ने उन पर धर्म विशेष पर टिप्पणी करते हुए गाली-गलौज और मारपीट की। आरोप है कि हमलावरों ने छात्र मोहम्मद कैफ के सिर पर कड़ा पंच मारा तथा अन्य छात्रों को मुक्कों-लातों से पीटा। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू की और तीन आरोपियों सुनील कुमार, प्रिंस, बूटा सिंह को पहले ही गिरफ्तार कर उनसे कड़ा बरामद किया। अब उसी जांच के चलते चौथे आरोपी बबलू को भी धर दबोचा गया है।

एसपी दीपक सहारण ने संभाला कार्यभार, नशे पर लगाम पहली प्राथमिकता

एसपी की नशा तस्करों को चेतावनी नशे का धंधा छोड़ दें या फिर देश

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा

सिरसा के नवनियुक्त एसपी दीपक सहारण ने नशा तस्करों को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि या तो वे नशे का धंधा छोड़ दें या फिर देश छोड़ दें। सिरसा जिला में नशा तस्करों के लिए कोई जगह नहीं है। पुलिस उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करते हुए न केवल जेलों में डालेगी, बल्कि गैरकानूनी ढंग से बनाई गई संपत्ति को भी सीज करेगी। एसपी दीपक सहारण बाद दोपहर कार्यभार संभालने के बाद पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उल्लेखनीय है कि दीपक सहारण को डॉ. मयंक गुप्ता की जगह शुक्रवार को सिरसा का एसपी लगाया गया। मयंक गुप्ता के तबादले के पीछे सप्ताहभर में सिरसा जिला में नशे से युवाओं की हो रही मौत को मुख्य वजह माना जा रहा है।

नवनियुक्त एसपी दीपक सहारण ने कहा कि उनकी मुख्य प्राथमिकता सिरसा जिला को नशा मुक्त करना है और इसके लिए न केवल नशा तस्करों पर शिकंजा कसा जाएगा, बल्कि जिलावासियों के सहयोग से नशामुक्ति अभियान चलाकर नशे में लिप्त युवाओं को इस सामाजिक बुराई से बाहर निकालने की प्राथमिकता रहेगी। इसके लिए सामाजिक संस्थाओं का सहयोग भी लिया जाएगा। नशा तस्करों के खिलाफ ढिलाई केस में लापरवाह अधिकारियों व कर्मचारियों के खिलाफ भी सख्ती बरती जाएगी। उन्होंने कहा कि दो राज्यों की सीमा पर सटा होने के कारण सिरसा जिला से नशे के सौदागरों पर कार्रवाई के लिए साथ लगते राजस्थान व पंजाब के पुलिस अधीक्षकों से भी तालमेल स्थापित किया जाएगा। उन्होंने दोहराया कि पुलिस मेडिकल नशे के खिलाफ भी लगाम लगाएगी और जल्द ही मेडिकल एसोसिएशन के साथ बैठक कर पुलिस अपने इरादे स्पष्ट कर देगी। पुलिस अधीक्षक ने अपना नंबर सार्वजनिक करते हुए कहा कि कोई भी जिले का नागरिक बेझिझक होकर अपराध में संलिप्त लोगों की जानकारी दे सकता है और उसका नंबर गुप्त रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि नशे के अलावा छीना झपटी सहित दूसरे अपराधों पर भी पुलिस नकेल कसेगी और शीघ्र ही इसका परिणाम भी जिलावासियों को देखने को मिलेगा।

नशे से मौत केस में रानियां थाना प्रभारी सस्पेंड

सिरसा। पत्रकारों से बातचीत करते सिरसा के एसपी दीपक सहारण।

सिरसा के नवनियुक्त एसपी दीपक सहारण ने रानियां थाना प्रभारी इंस्पेक्टर ढिनेश कुमार को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। उल्लेखनीय है कि रानियां थाना अंतर्गत पड़ने वाले ओटू गांव में एक ही दिन में दो युवकों की नशे से मौत हो गई थी। क्षेत्र में बढ़ते नशे को लेकर सरकार व पुलिस प्रशासन की खूब किरकिरी हो रही थी, वहीं सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने भी इसको लेकर सरकार से सवाल किए थे। पुलिस अधीक्षक ने रानियां थाना प्रभारी को निलंबित कर दिया है। हालांकि उन्हें पूर्व पुलिस अधीक्षक डॉ. मयंक गुप्ता ने कल ही लाइन हाजिर कर दिया था, लेकिन आज आते ही नवनियुक्त एसपी ने उन्हें निलंबित कर दिया।

नशीले पदार्थों सहित तीन तस्कर गिरफ्तार

डबवाली। पुलिस ने जिला क्षेत्र से तीन नशा तस्करों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से लाखों रुपये की हेरोइन, चूरापोस्त व अफीम बरामद की है। एएनसी प्रभारी डबवाली सूबे सिंह ने शनिवार को बताया कि पकड़े गए आरोपियों की पहचान खुशप्रीत सिंह, विनीत कुमार व मनप्रीत उर्फ काला निवासी गांव खतरावां जिला सिरसा के रूप में हुई है। सूबे सिंह ने बताया कि एएसआई राजेंद्र प्रसाद पुलिस टीम के साथ गश्त पर अनाज मंडी डबवाली की तरफ जा रहे थे। इसी दौरान फायर ब्रिग्रेड दफ्तर के पास लगते पार्क के गेट के सामने मोटरसाइकिल पर एक नौजवान लडका बैठा था। जो पुलिस की गाडी को आता देखकर एकदम मोटरसाइकिल को भागने की कोशिश करने लगा। शक के आधार पर पुलिस ने उसे रोक लिया और तलाशी ली तो उसके कब्जे से डेढ़ लाख रुपये की हेरोइन बरामद हुई। इसके अलावा पुलिस ने मनप्रीत उर्फ काला पुत्र गुरतेज सिंह निवासी गांव खतरावां जिला सिरसा को 1 किलो चूरापोस्त पोस्त व 316 ग्राम अफीम सहित गिरफ्तार किया है। सीआईए कालांवाली प्रभारी सुरेश कुमार ने बताया कि पुलिस टीम गांव सुखचैन के निकट नाकाबंदी कर वाहनों की चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान गांव तारूआना की तरफ से एक कार आती दिखाई दी। पुलिस ने कार को रूकवा लिया और जांच की तो कार से चूरापोस्त व अफीम बरामद हुई। आरोपी के खिलाफ थाना कालांवाली में मादक पदार्थ अधिनियम के तहत अभियोग दर्ज कर आगामी कार्रवाई की जा रही है।

चूरापोस्त तस्कर गिरफ्तार

सिरसा। पुलिस ने नशा तस्करों पर कार्रवाई करते हुए सिरसा जिले के कुत्ताबढ़ क्षेत्र से एक तस्कर को करीब साढ़े चार किलोग्राम चूरापोस्त सहित गिरफ्तार किया है। एएनसी सिरसा प्रभारी राजेंद्र कुमार ने शनिवार को बताया कि पकड़े गए तस्कर की पहचान दीपक उर्फ बिट्टू निवास सिरसा के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि पुलिस टीम गश्त व पड़ताल के दौरान ओटू हैड से गांव कुत्ताबढ़ की तरफ जा रही थी। पुलिस टीम कुत्ताबढ़ के पास पहुंची तो एक व्यक्ति प्लास्टिक का थैला लिए सडक किनारे खड़ा दिखाई दिया जो पुलिस टीम को देखकर पीछे मुडकर चलने लगा। शक के आधार पर पुलिस ने उसे काबू कर लिया। तलाशी ली गई तो उसके थैले से साढ़े चार किलोग्राम चूरापोस्त बरामद हुआ। पूछताछ मे आरोपी की पहचान दीपक उर्फ बिट्टू निवासी कुत्ताबढ़, सिरसा के रूप में हुई। आरोपी के खिलाफ रानियां थाना में मामला दर्ज किया गया है।

भट्टूकलां। अनाज मंडी में पड़ा भूसे का ढेर। फोटो : हरिभूमि

भट्टू अनाजमंडी में धान का भूसा उठाने पर बना विवाद

हरिभूमि न्यूज ⏭ भट्टूकलां

भट्टूकलां अनाज मंडी इन दिनों धान के भूसे को लेकर उठा विवाद चर्चा का विषय बना हुआ है। मंडी में जगह-जगह पड़े धान के भूसे के ढेर न केवल दुकानदारों और व्यापारियों के लिए परेशानी का कारण बन रहे हैं, बल्कि अब यह विवाद थाने तक भी पहुंच गया है। पिछले दो-तीन वर्षों से भट्टू अनाज मंडी में धान की आवक में लगातार वृद्धि हुई है। मंडी में आने वाले धान की झराई, सफाई और अन्य प्रक्रियाओं के बाद उसका भूसा मजदूरों के हवाले कर दिया जाता है। किसान आमतौर पर इस भूसे को वापस नहीं ले जाते, जिसके चलते मजदूर इसे अपने स्तर पर बेच देते हैं। बताया जाता है कि पिछले वर्ष मंडी में करीब ढाई से तीन लाख रुपये का भूसा बेचा गया था, जिसकी कीमत लगभग 300 रुपये प्रति क्विंटल रही थी। इस वर्ष स्थिति कुछ अलग रही। लगभग बीस से पच्चीस दिन बीत जाने के बाद भी मंडी में पड़ा यह भूसा नहीं उठाया गया। जब कुछ लोगों ने इसे उठाने का प्रयास किया तो कई अन्य लोगों ने भी उस पर दावा जताया। भूसे के स्वामित्व को लेकर यह विवाद बढ़ते-बढ़ते पुलिस थाने तक पहुंच गया।

मंडी में असंतोष

व्यापारी वर्ग का कहना है कि मंडी में भूसे के ढेर से उडने वाली धूल और गंदगी के कारण ग्राहकों का आना-जाना मुश्किल हो गया है। उनका कहना है कि मार्केट कमेटी को इस मामले में तत्काल हस्तक्षेप करते हुए भूसे की नीलामी या ठेका प्रक्रिया अपनानी चाहिए, ताकि विवाद खत्म हो सके और मंडी परिसर स्वच्छ रहे। इस बारे में मार्केट कमेटी के सचिव से बात की तो उन्होंने कहा कि आप राजवीर से बात करो लेकिन राजवीर ने भी पल्ला झाड़ते हुए कहा कि मुझे मामले का पता नहीं है आप सचिव से बात करो वह इस मामले को एक दूसरे पर थोंप कर पल्ला झाड़ते रहे।

भूसा न उठाने का नोटिस

इस बीच, मंडी में एक इश्तिहार भी चस्पा पाया गया है, जिसमें मार्केट कमेटी सचिव के नाम से यह चेतावनी दी गई है कि कोई भी आम व्यक्ति इस भूसे को न उठाए, अन्यथा कार्यालय आदेशों की अवहेलना करने पर विभागीय कार्रवाई की जाएगी। हालांकि, इस नोटिस पर किसी अधिकारी के हस्ताक्षर नहीं हैं, जिससे इसकी प्रामाणिकता पर सवाल उठ रहे हैं। समाजसेवी लीलाधर बंसल ने इस पूरे मामले पर चिंता जताते हुए कहा कि इस मामले में सत्तारूढ़ दल से जुड़े कुछ नेता भी अप्रत्यक्ष रूप से शामिल हैं। बंसल ने कहा कि अन्य मंडियों की तरह भट्टू अनाज मंडी में भी भूसे को नीलामी या ठेके के माध्यम से उठवाने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

हांसपुर फ्लाईओवर के पास बस क्यू शेल्टर बनाने की मांग

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

सतपाल बाजीगर।

नेशनल हाइवे बाईपास पर हांसपुर फ्लाईओवर के समीप बस क्यू शेल्टर बनाने की मांग एक बार फिर जोर पकडने लगी है। इसको लेकर प्रमुख समाजसेवी सतपाल बाजीगर ने प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और राज्यसभा सांसद सुभाष बराला को पत्र लिखा है। सतपाल बाजीगर का कहना है कि यहां लंबे समय से बस क्यू शैल्टर बनाने की मांग की जा रही है। बस क्यू शैल्टर बनने से लोगों को काफी राहत मिलेगी। सीएम व सांसद को लिखे पत्र में सतपाल बाजीगर ने कहा कि शहर से बाहर बस स्टैण्ड बनने के बाद से अधिकतर बसें शहर के अंदर से गुजरने की बजाय नेशनल हाइवे बाईपास से गुजरती है। ऐसे में शहर में आने वाले लोग बाईपास पर रतिया चुंगी के समीप हांसपुर फ्लाईओवर पर उतरते है वहीं यहां से अपने गंतव्य तक जाने के लिए बसें पकड़ते हैं लेकिन यहां प्रशासन द्वारा अभी तक बस क्यू शैल्टर का निर्माण नहीं करवाया गया है। गर्मी-सर्दी और बरसात के समय लोगों को खुले में खड़े होकर बसों का इंतजार करना पड़ता है। इस कारण लोगों खासकर महिलाओं और बुजुर्गों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। शहरवासी लंबे समय से यहां बस क्यू शैल्टर बनाने की मांग कर रहे हैं ताकि यहां आराम से बैठकर बस का इंतजार किया जा सके। सतपाल बाजीगर ने सीएम और सांसद को पत्र लिखकर लोगों की इस समस्या से अवगत करवाया और बस क्यू शैल्टर का जल्द निर्माण करवाने की मांग की है।

सेंट जेवियर स्कूल में लगी भव्य मॉडल प्रदर्शनी

कालांवाली। सेंट जेवियर स्कूल कालांवाली में बच्चों द्वारा भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में स्कूल प्रबंधक कमेटी के चेयरमैन एडवोकेट सुरेंद्र सिंह व चरणजीत कौर ने बच्चों की प्रतिभा की सराहना कर प्रोत्साहित किया और कहा कि प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की रचनात्मक कलात्मक प्रतिभा को दर्शाना है।

स्कूल प्रधानाचार्य सोनिया कंबोज ने बताया कि एकदिवसीय प्रदर्शनी में कक्षा पहली से लेकर दसवीं तक के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया और विभिन्न चार्ट, मॉडल और प्रोजेक्ट प्रस्तुत किए गए। प्रदर्शनी को अलग-अलग अनुभागो में बांटा गया। जैसे रोबोटिक्स, विज्ञान कला, सामाजिक अध्ययन ,पर्यावरण अध्ययन व हिंदी आदि। विज्ञान अनुभाग में विद्यार्थियों ने पवन चक्की, ह्रदय की संरचना, ग्रीन हाउस प्रभाव, गणित में पैरामीटर एरिया शहर के जरिए दिखाया गया। हिंदी में अलंकार का माडल, सामाजिक में हीरा कुंड बांध का माडल अभिभावकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र रहा।

जांडली कलां के कन्या विद्यालय में पेयजल स्थल पर लगवाया टीन शेड

हरिभूमि न्यूज ⏭ भूना

भूना। पेयजल क्षेत्र पर टीन शेड क उद्घाटन करते सरपंच प्रतिनिधि।

छात्राओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए ग्राम पंचायत जांडली कलां ने एक सराहनीय कदम उठाया है। पंचायत की ओर से राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जांडली कलां के पेयजल क्षेत्र पर टीन शेड का निर्माण करवाया गया है। इस सुविधा के शुरू होने से अब छात्राओं को पानी पीते समय धूप या बारिश में खड़े रहने की परेशानी से छुटकारा मिल गया है।

शनिवार को सरपंच प्रतिनिधि विजय कमांडो ने विद्यालय परिसर में पहुंचकर टीन शेड का विधिवत उद्घाटन किया। इस अवसर पर स्कूल प्रबंधन समिति के पदाधिकारियों, अध्यापकों और पंचायत सदस्यों की मौजूदगी में उन्होंने शैड को विद्यालय को समर्पित किया। विजय कमांडो ने कहा कि छात्राओं की सुविधा के लिए पंचायत हर संभव सहयोग करती रहेगी। उन्होंने बताया कि शिक्षा और स्वच्छता से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता दी जा रही है ताकि विद्यालयों में बेहतर माहौल तैयार किया जा सके।

विद्यालय के प्रिंसिपल सतीश कुमार ने पंचायत का आभार जताते हुए कहा कि यह शेड बरसात और गर्मी के मौसम में छात्राओं के लिए बड़ी राहत लेकर आएगा। मुख्य शिक्षिका सुदेश रानी ने भी कहा कि इस सुविधा से छात्राओं को पेयजल भरने या पीने के दौरान किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

इस मौके पर स्कूल प्रबंधन समिति के प्रधान विनोद कुमार मंडेरना, सदस्य वीरभान भैरो, बलिंदर सिंह कोहाड़, अजमेर सिंह जांगड़ा, सुनीता देवी, अध्यापक जयबीर सिंह, सतबीर सिंह, हरपाल सिंह श्योकंद, जयदीप सिंह, धर्मेन्द्र सिंह, हैंडबाल कोच संकित बूरा और अनिल कुमार सहित पूरा स्टाफ मौजूद रहा।

एफएम रेडियो पर पुखराज सिंह चौहान ने की लाइव चर्चा

सिरसा। चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय के मीडिया सेंटर में चल रहे एफएम 90.4 सिरसा रेडियो पर वरिष्ठ अधिवक्ता पुखराज सिंह चौहान ने विभिन्न कानूनी विषयों पर जानकारी श्रोताओं से सांझा की। इस दौरान उन्होंने क्रिमिनल प्रक्रिया, नए कानून के बारे में तथा सिविल मैटर्स, मेट्रोमोनियल, एमएसीएटी कानून के बारे में, साइबर क्राइम, डोमेस्टिक वोमेन वायलेंस एक्ट सहित अन्य बहुत से विषयों पर श्रोताओं को उपयोगी जानकारी देकर लाभांवित किया। उन्होंने कहा कि चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विजय कुमार व जर्नलिज्म एंड मास क युनिकेशन के अध्यक्ष एवं स्टेशन डायरेक्टर सेवा सिंह बाजवा का सिरसा के लोग धन्यवाद करते हैं की विश्वविद्यालय ने विद्यार्थियों व आमजन के लिए सभी विषयों की उपयोगी जानकारी देने का एक बड़ा माध्यम बनाया है। प्रोग्राम का संचालन रेडियो सिरसा के एंकर दर्शन सिंह तथा उपाधीक्षक राजेश कंबोज ने बखूबी निभाया।

कागदाना में पेयजल किल्लत, ग्रामीणों ने जलघर पर जड़ा ताला

हरिभूमि न्यूज ⏭ चौपटा

चौपटा। जलघर के आगे धरने पर बैठे ग्रामीण। फोटो : हरिभूमि

गांव कागदाना में पेयजल किल्लत गंभीर बनी हुई है। पानी की समस्या से जूझ रहे ग्रामीणों ने जलघर के मेन गेट पर ताला जड़ दिया और गेट के सामने धरने पर बैठे गए। सूचना मिलने पर जन स्वास्थ्य विभाग के एसडीओ संदीप कुमार और जेई अश्विनी कुमार मौके पर पहुंचे और ठोस आश्वासन के बाद ग्रामीणों ने ताला खोला और धरना स्थगित किया।

धरने पर बैठे गांव कागदाना के सरपंच प्रतिनिधि मांगेराम बैनीवाल, भूपेंद्र बैनीवाल जिला पार्षद प्रतिनिधि, डॉ. धर्मपाल गढ़वाल, नरसी घोटड, कालू खान, चंद्रभान शर्मा, राजकुमार गैदर, विकास बैनीवाल, ओमप्रकाश बैनीवाल, अकबर खान, राकेश शर्मा, सुरजीत कूकना, राजपाल सोनी, तुलसीराम शर्मा, रवींद्र बैनीवाल, लीलाधर गढ़वाल, शेरसिंह शर्मा, मदनलाल शर्मा, हरिसिंह घोटड, अरविंद्र गैदर, होशियार सिंह, कपिल सुथार, डॉ. हनुमान गढ़वाल, रणजीत गैदर, पवन मांजू आदि ने बताया की गांव के जलघर की डिग्गियां खाली पड़ी है और पानी की मोटर भी खराब है। घरों में पेयजल सप्लाई ठप है। खेतों में काम का समय चल रहा है। धरने की सूचना मिलने पर जन स्वास्थ्य विभाग के एसडीओ संदीप कुमार और जेई अश्विनी कुमार मौके पर पहुंचे तथा मोटर ठीक करवाने व पीने के पानी की समस्या का जल्द समाधान का आश्वासन दिया।

2018 में पारित बिजली योजना को ही लागू करे सरकार: शीशपाल केहरवाला

सिरसा। कालांवाली के कांग्रेस विधायक शीशपाल केहरवाला ने बिजली उपभोक्ताओं के पक्ष में राज्य सरकार से मांग की है कि वर्ष 2018 में बिजली निगम की ओर से बीपीएल स्कीम के तहत गुलाबी व पीले कार्डधारकों तथा परमानेंट डिफाल्टर्स से जो किलोवाट के हिसाब से बिल भरवाए गए थे, उसी स्कीम को गरीब वर्गों के बिजली उपभोक्ताओं पर पुनः लागू कर उन्हें लाभान्वित किया जाए। विधायक शीशपाल केहरवाला ने कहा कि वर्ष 2018 में प्रदेश की भाजपा सरकार ने पीले व गुलाबी कार्डधारकों व परमानेंट डिफाल्टर्स के लिए जो योजना लागू की थी, उसमें किसी प्रकार की इनकम व कोई यूनिट की रीडिंग का प्रावधान नहीं था मगर अब शासन ने उसमें परिवर्तन कर दिया है जिसके तहत सभी एससी, बीपीएल कार्डधारकों के लिए एक वर्ष में 1800 यूनिट व वार्षिक आय एक लाख रुपए तक होना अनिवार्य किया गया है। विधायक केहरवाला ने कहा कि गरीब परिवारों के लिए योजना में उपरोक्त परिवर्तन करके उन्हें भी सामान्य वर्ग के लिए निर्धारित नियमों में लाया गया है। विधायक केहरवाला ने कहा कि गरीब व वंचितों के लिए ऐसी सेवाएं नियमबद्ध किए जाने से उनके लिए अनेक संकट खड़े हो गए हैं। उन्होंने राज्य सरकार से आग्रह किया है कि इन नए लागू किए गए नियमों को हटाकर तुरंत प्रभाव से वर्ष 2018 की योजना को ही लागू करें ताकि गरीब व वंचित परिवारों को लाभ हो सके।

आपसी समन्वय व गंभीरता से कार्य करें : डीसी

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा

- श्री गुरु तेग बहादुर के 350वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में राज्यभर में चार पवित्र यात्राएं आयोजित होंगी। पहली यात्रा 8 नवंबर को रोड़ी से आरंभ होगी, जिसमें सीएम आएंगे

सिरसा के उपायुक्त शांतनु शर्मा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि श्री गुरु तेग बहादुर के 350वें शहीदी दिवस तथा सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती पर रन फॉर यूनिटी और हरियाणा दिवस पर आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के सफल आयोजन के लिए सभी विभाग आपसी तालमेल के साथ गंभीरता से कार्य करते हुए तय समय पर संपूर्ण व्यवस्था सुनिश्चित करें। उपायुक्त शांतनु शर्मा शनिवार को जिला मुख्यालय में विभिन्न विभागों के अधिकारियों की बैठक को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान पुलिस अधीक्षक दीपक सहारण भी विशेष रूप से मौजूद रहे। इससे पहले मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजन संबंधित तैयारियों को लेकर अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। उपायुक्त ने बताया कि प्रदेश सरकार ने श्री गुरु तेग बहादुर के 350वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में राज्यभर में चार पवित्र यात्राएं आयोजित करने का निर्णय लिया है। पहली यात्रा 8 नवंबर को रोड़ी (जिला सिरसा) से आरंभ होगी, जिसमें मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी शिरकत करेंगे। तीन नवंबर को गुरु तेग बहादुर के जीवन परिचय पर आधारित एक निबंध प्रतियोगिता चार भाषाओं हिंदी, संस्कृत, पंजाबी और अंग्रेजी में जिला के स्कूलों में आयोजित की जाएगी। प्रतियोगिता के तीन उत्कृष्ट प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार भी प्रदान किए जाएंगे।

1 नवंबर को भी होगा कार्यक्रम

डीसी शांतनु शर्मा ने बताया कि सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती पर 31 अक्टूबर को रन फॉर यूनिटी का आयोजन किया जाएगा, जो शहीद भगत सिंह स्टेडियम सिरसा से सुबह सात बजे आरंभ होगी। देश की एकता और अखंडता को समर्पित इस दौड़ में सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। इस दौरान जिला में राष्ट्रीय एकता के ध्येय के साथ पदयात्राओं का भी आयोजन किया जाएगा। इसके अलावा एक नवम्बर को हरियाणा दिवस पर भी कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। सरकार द्वारा राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम के 150 गौरवशाली वर्ष को पूरे देशभर में विशेष उत्सव के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। इस क्रम में देशभक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, विचार गोष्ठियां और जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन होगा।

सिरसा के युवाओं में छिपे टैलेंट को निखारेगा आहुजा प्रोडक्शन, प्रतियोगिता 31 को : यश

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा

सिरसा की प्रतिभाओं में छुपे टैलेंट को निखारने के लिए आहुजा प्रोडक्शन की तरफ से आईकॉन ऑफ इंडिया-2025 का आगाज 31 अक्तूबर-2025 को शाम 6 बजे स्थानीय महाराजा पैलेस में किया जाएगा। इस कार्यक्रम में गीत-संगीत व मॉडलिंग, डांसिंग में कलाकार प्रतिभागिता कर अपनी प्रतिभा का खुलकर प्रदर्शन करेंगे। संस्था के निदेशक व फाऊंडर यश आहुजा ने शनिवार को बताया कि इस कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर दिल्ली से मॉडल दर्शित सिंह, स्माइल कंबोज, सना कंबोज व हरियाणवी डांसर लक्षित सोनी संयुक्त रूप से करेंगे। अब तक आहुजा प्रोडक्शन की ओर से 5 कार्यक्रम चंडीगढ़, राजस्थान, जयपुर व सिरसा में आयोजित किए जा चुके हैं। सिरसा में यह दूसरा शो होगा। उन्होंने बताया कि इन शो को करवाने का उद्देश्य यही है कि जिन बच्चों में टेलेंट होता है, उन्हें ट्रेनिंग देकर उनके अनुरूप शो में एंट्री करवाई जाए। सिरसा जिला ग्रामीणांचल से घिरा हुआ है और ग्रामीणांचल के युवाओं में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए ये टैलेंट शो कंपीटिशन करवाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि सभी प्रतिभागियों को मेकअप, ड्रेस, हेयर स्टाइल, फूड, फोटोशूट, ब्रांडशूट, न्यूज कटिंग निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाएगा।

खबर संक्षेप

सड़क हादसे के आरोपी चालक को पकड़ा

फतेहाबाद। रतिया में दादूपुर मोड़ के पास एक ट्रैक्टर की चपेट में आने से बाइक सवार की मौत होने के मामले में थाना सदर रतिया पुलिस ने आरोपी ट्रैक्टर चालक को गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए चालक की पहचान बबलू पुत्र मांगे राम निवासी निमड़ी के रूप में हुई है। थाना सदर रतिया प्रभारी बिजेंद्र सिंह ने बताया कि यह मामला 20 अक्टूबर का है। बीरांबदी निवासी मुखत्यार सिंह सुबह दूध बेचने बाइक पर जा रहे थे, जहां ट्रैक्टर की टक्कर से उनकी मौत हो गई।

धन शीतल कैलाश प्रतिभा गुणगान दिवस आज

कालांवाली। श्री एसएस जैन सभा कालांवाली की ओर से 26 अक्टूबर को धन शीतल कैलाश प्रतिभा गुणगान दिवस मनाया जाएगा। समारोह में हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, राजस्थान सहित देशभर से श्रद्वालु पहुंचेंगे। जैन सभा के संरक्षक पारस जैन व नरेश गर्ग धर्मपुरा ने बताया कि भव्य समारोह ओढां रोड पर स्थित सीजन रिजोर्ट में 26 अक्तूबर को सुबह 9 बजे शुरू होगा। कार्यक्रम से पूर्व सुबह सवा 7 बजे से प्रारंभ होगी।

पराली प्रबंधन की राशि को नहीं काटने पड़ेंगे चक्कर

फतेहाबाद। पराली प्रबंधन वेरीफिकेशन के लिए गांव बीघड़ में एक दिवसीय जागरुकता शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें सभी नोडल अधिकारियों व पंचायत प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कृषि विकास अधिकारी डॉ. अंकित ढिल्लों ने बताया कि पराली प्रबंधन के अंतर्गत 1200 रुपये प्रति एकड़ प्रोत्साहन राशि प्राप्त करने के लिए किसानों को अब किसी भी दफ्तर के चक्कर लगाने की आवश्यकता नहीं है। पात्र किसानों की वेरिफिकेशन प्रक्रिया उनके गांव में ही की जाएगी, जिससे उन्हें सुविधा मिलेगी और पूरी प्रक्रिया पारदर्शी रूप से संपन्न होगी। उन्होंने बताया कि गांव स्तर पर वेरीफिकेशन की जिम्मेदारी सरपंच, नंबरदार, पटवारी, ग्राम सचिव व वीएलडीए को साझा रूप से सौंपी गई है। यह संपूर्ण प्रक्रिया एक मोबाइल एप के माध्यम से की जाएगी, जिसके संचालन का प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। ग्रीन जोन में प्रत्येक अधिकारी को 100-100 किसानों की सूची दी गई है। इस अवसर पर सरपंच हरिकिशन, अमनदीप, जगमीत, पंच सचिन मांझू, पटवारी धर्मेंद्र, ग्राम सचिव महाबीर, सपना, भारती, सन्नी मेहता तथा अनिल गोदारा उपस्थित रहे।

नगरपालिका कर्मचारी संघ के आह्वान पर सफाई कर्मचारियों ने किया प्रदर्शन

कर्मचारियों ने किया रविवार को काम नहीं करने का ऐलान

ठेकेदार को निजी फायदा पहुंचाने के आरोप, सीएसआई के फरमान के खिलाफ लामबंद

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

करोड़ों रुपये का ठेका देने के बावजूद मुख्य सफाई निरीक्षक द्वारा नगरपरिषद कर्मचारियों से कूड़ा उठवाने और रविवार की छुट्टी बंद करने के विरोध में नगरपालिका कर्मचारी संघ के आह्वान पर परिषद कर्मचारियों ने शनिवार को रोष प्रदर्शन किया। इस दौरान कर्मचारियों ने सीएसआई के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और घोषणा की कि न तो सफाई कर्मचारी रविवार के दिन काम पर आएंगे और न ही डम्पिंग प्वाइंटों से कचरा उठाया जाएगा। इसको लेकर नगरपालिका जनरल हाउस की मीटिंग की इकाई प्रधान नरेश राणा की अध्यक्षता में हुई। बैठक का संचालन सचिव ओमप्रकाश लोट ने किया।

कर्मचारियों को संबोधित करते हुए नरेश राणा व ओमप्रकाश लोट ने कहा कि पहले ही स्वच्छता अभियान के नाम पर सफाई कर्मचारियों की रविवार की छुट्टी बंद कर रखी है। अगर कर्मचारी रविवार की छुट्टी के बदले किसी और दिन छुट्टी करें तो उसकी गैरहाजिरी लगा दी जाती है जोकि सरासर कर्मचारियों के साथ अन्याय है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा सफाई दरोगा का सफाई कर्मचारियों के साथ बोलने का लहजा भी ठीक नहीं है। सीएसआई के ऐसे व्यवहार से कर्मचारियों में भारी आक्रोश है। कर्मचारी नेताओं ने कहा कि नगर परिषद ने डोर टू डोर कचरा कलेक्शन व डंपिंग प्वाइंट लिफ्टिंग का करोड़ों रुपयों का ठेका कुरुक्षेत्र की फर्म को दिया हुआ है, इसके बावजूद सीएसआई द्वारा निगरानी के नाम पर सफाई कर्मचारियों की ड्यूटी लगाकर उन्हीं कर्मचारियों से कूड़ा उठाने के आदेश जारी किए गए हैं, जिससे ये अंदेशा होता है नगर परिषद प्रशासन सीधा ठेकेदार को फायदा पहुंचाना चाहता है। निगरानी के नाम पर सफाई कर्मचारियों के काम के 8 घंटे दर्शाए गए हैं जबकि सफाई सेवा अधिनयम में काम के घंटे 6 व 7 दर्शाए गए है। सीएसआई द्वारा 8 घंटे सफाई के आदेश जारी करना न्यायोचित नहीं है। जनरल हाउस बैठक में सर्वसम्मति से फैसला लिया गया कि अब ना तो सफाई कर्मचारी रविवार के दिन काम पर नहीं आएंगे और ना ही डंपिंग प्वाइंट से कचरा उठाएंगे। संघ ने सख्त शब्दों ने नगरपरिषद प्रशासन को चेतावनी दी कि अगर सोमवार तक उनकी मांगों समाधान नहीं हुआ तो नगरपरिषद कर्मचारी सड़कों पर उतरने को मजबूर होंगे, जिसकी सारी जिम्मेवारी नगर परिषद प्रशासन की होगी।

फतेहाबाद। सीएसआई द्वारा जारी फरमान का विरोध करते नगर परिषद कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

आरोप- डंपिंग प्वाइंट लिफ्टिंग का करोड़ों रुपयों का ठेका होने के बावजूद नप कर्मी कर रहे काम

मीटिंग में ये रहे मौजूद

आज की मीटिंग में राज्य वरिष्ठ प्रधान रमेश तुषामड, कर्मचारी नेता बेगराज के अलावा जिला सचिव विजय ढाका, ओम प्रकाश झलनियां, सत्यवान टांक, वीरू रत्ती, अमित गिल, पवन चिंडालिया, धीरज गोघलिया, शकुन्तला सहित अनेक कर्मचारी मौजूद रहे।

गुरु तेग बहादुर जी के शहीदी दिवस पर निकलेगी यात्रा

फतेहाबाद। अधिकारियों की बैठक लेते उपायुक्त डॉ. विवेक भारती।

- जिला मुख्यालय पर 31 अक्टूबर को सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर आयोजित की जाएगी रन फॉर यूनिटी

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

श्री गुरु तेग बहादुर जी का 350वां शहीदी दिवस पूरी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाएगा। इस उपलक्ष्य में प्रदेशभर में यात्राएं निकाली जाएंगी। 25 नवंबर को धर्मनगरी कुरुक्षेत्र में राज्य स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इससे पहले 31 अक्टूबर को सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर रन फॉर यूनिटी का आयोजन किया जाएगा। साथ ही वंदे मातरम गीत के 150 साल पूरे होने पर भी कार्यक्रम का आयोजन होना है।

उपायुक्त डॉ. विवेक भारती शनिवार को लघु सचिवालय में इन कार्यक्रमों को लेकर विभिन्न विभागों के अधिकारियों की बैठक ली। डीसी ने निर्देश दिए कि इन सभी राष्ट्रीय और धार्मिक महत्व के आयोजनों की संवेदनशीलता को देखते हुए सभी संबंधित विभागों के अधिकारी माइक्रो मैनेजमेंट करना सुनिश्चित करें। डीसी ने कहा कि श्री गुरु तेग बहादुर जी के 350 साला शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में निकाली जाने वाली यात्रा 14 से 18 नवंबर के बीच जिला के विभिन्न स्थानों से होकर गुजरेगी। ये यात्रा महान गुरु द्वारा प्रचारित शांति, त्याग और सांप्रदायिक सद्भाव के शाश्वत संदेश देकर जाएगी। इस दौरान संगत द्वारा श्रद्धापूर्वक यात्रा का स्वागत और भागीदारी की जाएगी।

सीएम करेंगे शुभारंभ

उन्होंने कहा कि वल्लभभाई पटेल जयंती के अवसर पर 31 अक्टूबर को रन फॉर यूनिटी का आयोजन किया जाएगा। इस दिन सीएम नायब सिंह सैनी कार्यक्रम का शुभारंभ पंचायत भवन के सामने से करेंगे, जिसके बाद यह दौड़ एमएम कॉलेज परिसर में संपन्न होगी। वल्लभभाई पटेल जयंती के उपलक्ष्य में 26 नवंबर से 6 दिसंबर तक सरदार एटदीरेट 150-एकता मार्च का आयोजन भी किया जाएगा।

फतेहाबाद। अतिरिक्त उपायुक्त को ज्ञापन सौंपते हुए प्रतिनिधिमंडल के सदस्य।

जत्थेदार के घर हमले पर सुरक्षा की मांग की

फतेहाबाद। देश और प्रदेश में सिखों के हक की आवाज उठाने वाले हरियाणा सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व सदस्य जत्थेदार सुखसागर सिंह के घर पर हुए हमले को लेकर सिख संगठनों ने फतेहाबाद में बैठक की और इस घटना पर कड़ा रोष व्यक्त किया। बैठक के बाद प्रतिनिधिमंडल ने अतिरिक्त उपायुक्त के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नायब सैनी को ज्ञापन भेजकर जत्थेदार सुखसागर सिंह व उनके परिवार को सुरक्षा प्रदान करने की मांग की। प्रतिनिधिमंडल में लवी बाथ, रविंदर सिंह, सुरजीत सिंह, भूपिंदर सिंह, जगबीर सिंह, मंजीत, पूरण माजरा, सुरेश गढ़वाल व मलकीत सिंह शामिल रहे। उन्होंने बताया कि जत्थेदार सुखसागर सिंह के हिसार के डाबरा चौक स्थित उनके घर पर 10-15 हथियारबंद लोगों ने रात्रि में 1:30 से 2 बजे के बीच हमला कर गोलियां चलाईं और बम फेंके। जत्थेदार सुखसागर सिंह और उनके बेटे एडवोकेट गुरपिंद्र सिंह ने दरियापुर कांड, 1984 और 1987 सिख दंगों से संबंधित याचिका राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग में दाखिल की थी।

विश्व जागृति मिशन ने खोला बाल संस्कार केंद्र

फतेहाबाद। विश्व जागृति मिशन फतेहाबाद मण्डल द्वारा सुधांशु महाराज के आशीर्वाद से सेवा भारती स्कूल, हंस कॉलोनी में बाल संस्कार केंद्र का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा नेता टेकचन्द मिढ़ा, सुदर्शन बत्रा तथा डॉ. रमनिता बत्रा ने शिरकत की। कार्यक्रम का संचालन मण्डल सदस्य डॉ. एलआर दहिया ने प्रकल्प प्रमुख के रूप में किया। इस अवसर पर मण्डल के अन्य सदस्य संदीप लौहान, किशोरी लाल झांब, सतीश कुमार, मुनीश कुमार आर्य, अशोक कत्याल व सेवा भारती की ओर से डॉ. हीरा लाल गुप्ता और नरेश बंसल उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान समाजसेवी विरेन्द्र नारंग के निधन पर मौन रखा गया।

पुलिस ने नशे के खिलाफ किया प्रेरित

- थानों और पुलिस चौकियों की टीमों ने गांवों, शिक्षण संस्थानों और खेल मैदानों में चलाया जनजागरुकता अभियान

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

फतेहाबाद। युवाओं को नशे के खिलाफ जागरूक करते पुलिस कर्मचारी।

जिला पुलिस द्वारा नशा मुक्त समाज की दिशा में जनजागरण अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में जिले के विभिन्न थानों और पुलिस चौकियों की टीमों ने गांवों, शिक्षण संस्थानों और खेल मैदानों में युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों से बचने और खेलों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम की शुरुआत गांव चांदपुरा से हुई। पुलिस चौकी बड़ोपल की टीम ने गांव बड़ोपल के खेल मैदान में बच्चों और किशोरों के साथ संवाद सत्र आयोजित किया।

वहीं, महिला थाना फतेहाबाद के एएसआई महेंद्र ने एमएम कॉलेज फतेहाबाद में छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए नशे से होने वाले मानसिक और शारीरिक नुकसान के बारे में विस्तार से बताया। इस अवसर पर कॉलेज परिसर में फ्रेंडली फुटबॉल मैच का आयोजन भी किया गया।

गांव ढिंगसरा व साधनवास में भी जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। टीम ने उपस्थित लोगों से अपील की कि वे अपने आसपास किसी भी संदिग्ध नशा गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को दें ताकि ऐसे मामलों पर सख्त कार्रवाई की जा सके।

दिव्यांग पुलिसकर्मियों का हालचाल जाना

फतेहाबाद। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन ने मानवीयता और नेतृत्व का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हुए पुलिस विभाग के उन कर्मियों की चिंता जताई है, जो ड्यूटी के दौरान या किसी दुर्घटना में दिव्यांग अथवा शारीरिक रूप से असमर्थ हो गए हैं। एसपी ने अपने अधीनस्थों के कल्याण को प्राथमिकता देते हुए पुलिस कल्याण शाखा की विशेष टीम को इन कर्मियों के घर व तैनाती स्थान पर भेजा। टीम ने उनसे मिलकर उनके स्वास्थ्य व पारिवारिक स्थिति की जानकारी ली तथा उन्हें यह संदेश दिया कि पुलिस अधीक्षक सदैव आपके साथ हैं।

अपना घर का 7वां वार्षिक महोत्सव 5 नवंबर से

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

सद्गुरुकृपा अपना घर आश्रम।

संत शिरोमणि श्री श्री 108 डॉक्टर स्वामी सदानंद महाराज के सानिध्य में चल रहे सद्गुरुकृपा अपना घर फतेहाबाद का सातवां वार्षिक महोत्सव 5 से 8 नवंबर तक आयोजित होगा। महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री कृष्ण कथा एवं गो सम्मेलन होगा। सद्गुरु अपना घर के मुख्य सेवक विनोद तायल ने बताया कि इस अवसर पर 5 से 7 नवंबर तक शाम 3 बजे से 6 बजे तक श्री कृष्ण कथा होगी। मुख्य सम्मेलन 8 नवंबर को 5 गोशालाओं व नंदीशालाओं के उद्घाटन के साथ सुबह 10.15 बजे प्रारंभ होगा, जोकि सदगुरु कृपा अपना घर, हिसार-सिरसा बाईपास एनएच 9 पर होगा। पूर्व राज्यपाल प्रोफेसर गणेशी लाल के सानिध्य में आयोजित कार्यक्रम के मुख्यअतिथि मंत्री कृष्ण कुमार बेदी शामिल होंगे। अध्यक्षता सीएम के मुख्य राजनीतिक सचिव तरूण भंडारी करेंगे व स्वागतकर्ता अग्रवाल सभा के संरक्षक देवी दयाल तायल होंगे। कार्यक्रम में गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज, डॉ. बीएम भारद्वाज भरतपुर, स्वामी जगत राज महाराज करनाल, स्वामी मुकुंद शरण महाराज भिवानी, स्वामी ज्योतिषनंद महाराज अजमेर, मोहन प्रियाचार्य महाराज पश्चिम बंगाल, बाबा ब्रह्म दास महाराज डेरा भूमणशाह, स्वामी दीपक महात्मा हरिद्वार, स्वामी राजदास महाराज कैमरी हिसार, स्वामी परमानंद महाराज रोहतक मौजूद रहेंगे। विशिष्ट अतिथि के तौर पर सांसद सुभाष बराला, पूर्व सांसद सुनीता दुग्गल, पूर्व विधायक दुडाराम, भाजपा जिला अध्यक्ष प्रवीण जोड़ा, चेयरमैन भारत भूषण मिढ़ा, चेयरमैन वेद फूलां, गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष श्रवण गर्ग, प्रमुख समाजसेवी सिरसा मनीष सिंगला, जिला उपायुक्त डॉ. विवेक भारती, विधायक बलवान सिंह दौलतपुरिया, पूर्व विधायक प्रहलाद सिंह गिलांखेड़ा आदि आएंगे।

सिरसा। भजन गायक कन्हैया मित्तल को सम्मानित करते हुए श्याम बगीची के सेवादार।

कन्हैया मित्तल का श्री श्याम बगीची धाम में सम्मान

सिरसा। भजन सम्राट कन्हैया मित्तल ने अनाजमंडी स्थित श्री श्याम बगीची धाम में पहुंचकर बाबा श्याम का आशीर्वाद लिया। श्री श्याम बगीची के मुख्य सेवादार पवन गर्ग ने बताया कि शुक्रवार देर शाम को भजन सम्राट कन्हैया मित्तल श्याम बगीची धाम में पहुंचे। उन्होंने बताया कि एक सप्ताह के दौरान वे जहां भी गए वहां पर उन्हें काफी लोगों ने सिरसा में श्री श्याम बगीची धाम में बाबा श्याम की ऐतिहासिक प्रतिमा से आशीर्वाद लेने के लिए प्रेरित किया गया। उसी प्रेरणा के चलते वे श्री श्याम बगीची धाम में पहुंचे हैं। उन्होंने कहा कि खाटू धाम के बाद यदि कहीं बाबा श्याम साक्षात रुप में विराजमान हैं तो वह सिरसा का श्री श्याम बगीची धाम ही है। उन्होंने कहा कि वे अब भविष्य में जब भी सिरसा आएंगे तो श्री श्याम बगीची में बाबा श्याम के दर्शनों के लिए अवश्य आएंगे।

हेल्थ-वेल्थ एंड लीगल अवेयरनेस कैंप शुरू

सिरसा। समर्पण वेलफेयर ट्रस्ट द्वारा अमित हेल्पलाइन के सहयोग से हिसार रोड स्थित झूंथरा धर्मशाला में तीन दिवसीय हेल्थ, वेल्थ एंड लीगल अवेयरनेस कैंप का आयोजन किया गया है। बीमा कंपनी यूनाईटिड के डीजीएम चंडीगढ़ सुबोध शर्मा ने कैंप का शुभारंभ किया। समर्पण वेलफेयर ट्रस्ट की ओर से 12वां कैंप आयोजित किया जा रहा है। जिसमें लोगों को स्वास्थ्य संबंधी जांच, उपचार व दवा उपलब्ध करवाया जाता है। शहर के प्रमुख चिकित्स अपनी सेवाएं प्रदान करते है। इसी प्रकार पूंजी निवेश के बेहतर विकल्प की भी कैंप में जानकारी दी जाती है। वित्त संबंधी विशेष आमजन की पूंजी निवेश संबंधी जिज्ञासा और शंकाओं का निवारण करते है। इसके साथ ही कैंप में कानून संबंधी जानकारी भी प्रदान की जाती है। तीन दिन तक सुबह व शाम के सेशन में विविध कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस मौके पर हरीश कुमार, राजकुमार आसेरी, मंदीप नैन, आरपी कंबोज, कश्मीर चंद, बृज बांसल, तनुज खट्टर, अमित गोयल, खुशीराम, बृजेश सचदेवा, इंद्र गोयल, राहुल लढ़ा आदि मौजूद रहे।

सिरसा। कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित करते मुख्य अतिथि।

रतिया। पराली बांधने की मशीनों को लेकर ज्ञापन सौंपते किसान।

पराली की गांठे बनाने के लिए नहीं मिल रही मशीनें

रतिया। गांव भानीखेड़ा ग्राम पंचायत के साथ दर्जनों किसान पराली प्रबंधन की समस्या को लेकर रतिया के तहसील कॉम्प्लेक्स पहुंचे। किसानों ने एसडीएम के नाम तहसीलदार को ज्ञापन सौंपकर पराली की गांठे बनाने के लिए पर्याप्त मात्रा में मशीनों का प्रबंध करने की मांग की। किसान रंजीत सिंह भानी खेड़ा ने कहा कि एक तरफ तो सरकार पराली ना जलाने के लिए फरमान जारी कर रही है, जबकि उनके गांव में पराली की गांठे बनाने वाली मशीन अभी तक नहीं भेजी गई है।इस मौके पर ग्राम पंचायत भानी खेड़ा के सरपंच प्रतिनिधि सुखबीर सिंह, रंजीत सिंह भानीखेड़ा, मुकंद सिंह, गुरजंट सिंह, कुलवंत सिंह, अमरीक सिंह, अजायब सिंह, गुरप्रीत सिंह, बेअंत सिंह, नछतर सिंह, लाम सिंह, जोधा सिंह, बलदेव सिंह, सहित दर्जनों किसान मौजूद थे।

साइबर अपराधियों और धोखाधड़ी से बचने के लिए सिम की तुरंत जांच करें

आपके आधार कार्ड पर कई सिम कार्ड हो सकते हैं एक्टिव

अपराधी एक ही आधार पर कई मोबाइल नंबर व सिम कार्ड जारी करवा लेते हैं

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

मोबाइल और डिजिटल सेवाओं के बढ़ते प्रयोग के साथ-साथ साइबर अपराध और वित्तीय धोखाधड़ी की घटनाएं भी तेजी से बढ़ रही हैं। इसी गंभीर चिंता के मद्देनजर जिला प्रशासन और फतेहाबाद पुलिस ने नागरिकों को चेतावनी दी है कि उनके आधार कार्ड पर कई सिम कार्ड सक्रिय होने की स्थिति गंभीर जोखिम पैदा कर सकती है। पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन ने बताया कि कुछ अनैतिक तत्व और साइबर अपराधी आधार कार्ड की जानकारी का दुरुपयोग कर एक ही आधार पर कई मोबाइल नंबर और सिम कार्ड जारी करवा लेते हैं। इसका सबसे बड़ा खतरा यह है कि नागरिक बिना जानकारी के फर्जी नंबरों के माध्यम से धोखाधड़ी और अपराध की शिकार बन सकते हैं। एसपी ने स्पष्ट किया कि मोबाइल ऑपरेटर ग्राहक की पहचान आधार कार्ड के माध्यम से सुनिश्चित करते हैं, लेकिन कई बार लोग अपनी व्यक्तिगत जानकारी साझा कर देते हैं या साइबर अपराधी इसे चोरी कर लेते हैं। इसके परिणामस्वरूप, एक ही आधार पर कई सिम कार्ड सक्रिय हो जाते हैं, जिनका इस्तेमाल फर्जी कॉल, मैसेज, बैंकिंग धोखाधड़ी और ऑनलाइन ठगी के लिए किया जा सकता है। एसपी ने नागरिकों से अपील की है कि वे तुरंत यह जांचें कि उनके आधार कार्ड पर कितने मोबाइल नंबर एक्टिव हैं। इसके लिए ट्राई की आधिकारिक वेबसाइट या अपने मोबाइल सेवा प्रदाता के कस्टमर केयर से संपर्क किया जा सकता है। यदि किसी आधार पर अनधिकृत सिम पाए जाते हैं तो तुरंत संबंधित ऑपरेटर और पुलिस को सूचित करें।

एसपी सिद्धांत जैन।

ट्राई की आधिकारिक वेबसाइट या अपने मोबाइल सेवा प्रदाता के कस्टमर केयर से संपर्क कर जानें कितने नंबर हैं आपके नाम पर

1909 नंबर से भी कर सकते हैं पता

एसपी सिद्धांत जैन ने कहा कि साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि कई सिम कार्ड का गलत उपयोग फर्जी आईडी बनाने, बैंक खातों में धोखाधड़ी और अन्य वित्तीय अपराधों में किया जा सकता है। यह स्थिति बेहद गंभीर है। यदि किसी के पास आपका आधार और लिंक्ड मोबाइल नंबर है, तो वह आपकी पहचान का दुरुपयोग कर सकता है। यह केवल वित्तीय सुरक्षा नहीं, बल्कि आपकी निजता पर भी गंभीर खतरा है। जिला पुलिस ने कहा कि यदि किसी को संदेह है कि उसके आधार पर अतिरिक्त सिम कार्ड जारी हैं, तो वह एसएमएस आधारित सेवा 1909 या ट्राई की वेबसाइट पर जाकर तुरंत जांच कर सकता है। इसके साथ ही, नागरिकों को अपने बैंकिंग और डिजिटल लेन-देन पर भी नियमित नजर रखने की सलाह दी गई है। एसपी जैन ने अंतिम चेतावनी देते हुए कहा, डिजिटल दुनिया में सतर्क रहना अब प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। किसी भी अज्ञात लिंक, कॉल या मैसेज पर ध्यान न दें और अपने आधार कार्ड की जानकारी केवल सुरक्षित और विश्वसनीय माध्यम से साझा करें। सुरक्षा ही सर्वोपरि है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 9315429403, 9253681005, 7988727916

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 26 अक्टूबर 2025

उड़ने के लिए तैयार फ्लाइंग कार

आसमान में उड़ते हवाई जहाज और हेलीकॉप्टर को तो हम सबने देखा है। अब बस कुछ ही वर्षों में आस-पास की दूरियों को तय करने के लिए फ्लाइंग कारें भी उड़ती हुई दिखने लगेंगी। कई विदेशी कंपनियां इस दिशा में पूरी तरह रेडी हो चुकी हैं तो अपने देश में भी इस बारे में जोर-शोर से तैयारी की जा रही है। भविष्य के नए हवाई सफर पर एक नजर।

टीकैब कंपनी चीन की ई20 एयरटैक्सी

{ कवर स्टोरी / एन. के. अरोड़ा }

उड़ने वाली कारें यानी फ्लाइंग कार या रोडेबल एयरक्राफ्ट यानी ऐसी गाड़ियां, जो सड़कों पर चल भी सकें और जरूरत पड़ने पर उड़ान भी भर सकें। अब ये केवल हॉलीवुड की फिल्मों का हिस्सा भर नहीं हैं बल्कि ये हकीकत है। हां, यह बात अलग है कि अभी इसका उपयोग लोगों ने शुरू नहीं किया है। अभी ये कारें सीमित स्तर पर प्रोटोटाइप, परीक्षण, नियामक मंजूरी और टेस्ट फ्लाइट के दौर से गुजर रही हैं। अभी सड़क पर दौड़ने और उड़ान भरने वाली ये कारें, आम लोगों के लिए उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन चीन, जापान, अमेरिका और यूरोप के कई देशों में ये कारें जल्द से जल्द आम लोगों के घरों के गैराज में दिखने लगेंगी।

कई स्तरों पर हो रही तैयारी: साल 2025 के अंत तक दुनिया भर में कई कंपनियां ऐसी

स्काई ड्राइव, जापान की एयरटैक्सी

इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेक ऑफ एंड लैंडिंग (वीटीओएल) कारों को पूरी तरह तैयार कर लेंगी, क्योंकि इन कंपनियों की फ्लाइंग कारों की प्रगति महत्वपूर्ण चरणों में है। कुछ देशों और कंपनियों ने तो अपनी कारों की सूची भी सोशल मीडिया पर जारी कर दी है। इस समय दुनिया भर के अलग-अलग देशों में करीब 250 ऐसी कंपनियां हैं, जो उड़ने वाली कारों यानी फ्लाइंग टैक्सियों या वीटीओएल परियोजनाओं पर काम कर रही हैं। कई प्रोटोटाइप पहले ही हवा में उड़ान भर चुके हैं, कुछ मानव पायलट के साथ और कुछ बिना इंसानी ड्राइवर के। उदाहरण के लिए टर्की में सीजेरी का प्रोटोटाइप और जापान में स्काई डाइव का प्रोटोटाइप हवा में उड़ान भर चुका है। कई कंपनियां एयर टैक्सी शुरू करने की बिल्कुल व्यावहारिक योजनाएं बना चुकी हैं, तो कुछ देशों ने सर्टिफिकेशन की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। कहने का मतलब उड़न कारें

जॉबी एविएशन, अमेरिका की ईवीटॉल

यानी, जमीन और हवा दोनों पर चलने वाली कारें भले अभी दुनिया में आम लोगों के इस्तेमाल में आना शुरू न हुई हों, पर इनके एक साथ पूरी दुनिया में इतनी बड़ी संख्या में प्रोजेक्ट काम कर रहे हैं कि दिन-रात इनके बारे में बातें होना स्वाभाविक है। इनके उज्ज्वल भविष्य को देखते हुए दुनिया के बड़े-बड़े उद्योगपति इन कारों पर भारी निवेश भी कर रहे हैं।

कई कंपनिया हैं एक्टिव: आज दुनिया के जिन देशों में प्रमुख कंपनियां ऐसी फ्लाइंग कारें बनाने में जुटी हुई हैं, उनमें संयुक्त राज्य अमेरिका में जॉबी एविएशन ने एफएए से एयर करियर प्रमाणपत्र हासिल किया है और डेल्टा एयरलाइंस के साथ साझेदारी की है। इसी तरह आर्चर एविएशन ने भी यूनाइटेड एयरलाइंस से 10 मिलियन डॉलर प्राप्त किया है। इसी तरह जेस्टन वन नामक एक व्यक्तिगत उड़न वाहन भी अमेरिका में विकसित किया गया है, जिसकी कीमत 1 लाख 28 हजार डॉलर है और जिसे उड़ाने के लिए किसी पायलट लाइसेंस की जरूरत नहीं है। जबकि चीन एक्सपेंग एयरोहॉट दुनिया की पहली ऐसी कंपनी है, जिसने बिना पायलट के यात्री उड़ानों के लिए नियामक स्वीकृति प्राप्त कर ली है। इसने लैंड एयरक्राफ्ट करियर नामक मॉड्यूलर कार विकसित की है, जिसमें एक फोल्डेबल ईवीटीओएल है। टीकैब टैग कंपनी ने ई-20 नामक मानवयुक्त ईवीटीओएल विकसित की है। इसी तरह ब्राजील ने ईव एयर मोबिलिटी, जापान की स्काई ड्राइव और जर्मनी की लिलियम बोलोकॉप्टर कंपनियों ने भी अपनी-अपनी उड़न कारें विकसित कर ली हैं और इन सबकी हवा में उड़ने और जमीन में जरूरत पड़ने पर चलने वाली ये कारें परीक्षण और अपग्रेडेशन की प्रक्रिया से गुजर रही हैं। इन दिनों इसी काल्पनिक सच को हकीकत में बदलने के लिए विकसित देशों में दर्जनों उड़न कारें अपनी बुनियादी उड़ाने भर रही हैं या दूसरे शब्दों में ट्रेंड हो रही हैं।

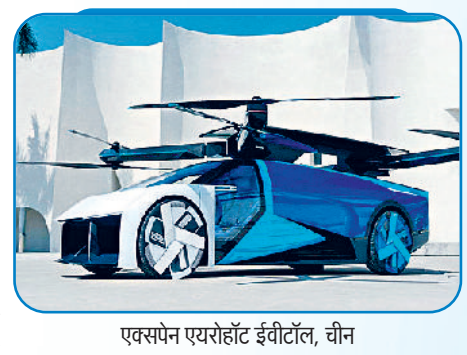

एक्सपेन एयरोहॉट ईवीटॉल, चीन

ऐसे आई सुर्खियों में: फ्लाइंग कारों की चर्चा अचानक इसलिए बढ़ी है, क्योंकि पिछले दिनों दो उड़ने वाली कारें एक फ्लाइंग शो के दौरान हवा में ही टकरा गईं और एक बड़ा हादसा हो गया। यह अलग बात है कि इसमें कोई जनहानि नहीं हुई। दरअसल, चीन के जिलिन में बीते 16 सितंबर 2025 की दोपहर को चल रहे चांगचुन एयर शो के दौरान एक्सपेन एयरोहॉट की दो वीटीओएल आपस में टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इस टक्कर से एक यात्री घायल हो गया, जिसे जानलेवा चोट नहीं लगी। लेकिन इस दुर्घटना की वजह से रातों-रात पूरी दुनिया की आटोमोबाइल इंडस्ट्री में वीटीओएल कारों के सिस्टमेटिक ढंग से प्लानिंग हो रही है। लोगों को उत्सुकता है कि एयर ट्रैफिक रेगुलेशन, पायलट ट्रेनिंग, बैटरी रिलायबिलिटी, इस तरह की सभी समस्याएं एक-एक करके हल हों ताकि उड़ने वाली कारें अब फिक्शन न रह जाएं।

बहरहाल, विशेषज्ञ कहते हैं कि इस बात में कोई संदेह नहीं है कि सन 2030 तक दुनिया के अनेक बड़े शहरों के आसमान में हवा में उड़ान भरने वाली कारें दिखने लगेंगी। *

भारत में भी जल्द उड़ेंगी एयरटैक्सी

केवल विदेशों में ही नहीं अपने देश भारत में भी ईवीटॉल विकसित करने में कुछ कंपनियां सक्रिय हैं। डीजीसीए ने पंजाब की एक कंपनी के एयरटैक्सी मॉडल को डिजाइन अप्रूवल सर्टिफिकेट भी दे दिया है। एयरटैक्सी के टेकऑफ और लैंडिंग के लिए वर्टिपोर्ट बनाने की प्लानिंग पर भी काम किया जा रहा है। बेंगलुरु की एक कंपनी भी इस दिशा में एक्टिव है। सब कुछ प्लानिंग के अनुसार फाइनल होने पर वर्ष 2028 तक दिल्ली-एनसीआर में एयर टैक्सी का परिचालन शुरू हो सकता है। इसके बाद कोलकाता, मुंबई जैसे अन्य मेट्रो शहरों में भी एयरटैक्सी चलने की संभावना है।

{ अवेयरनेस / संध्या सिंह }

इन दिनों लगभग रोज ही साइबर फ्रॉड की अनेक घटनाएं घटित हो रही हैं। साइबर क्रिमिनल्स नए-नए तरीकों से लोगों को अपने जाल में फंसा रहे हैं। ऐसे में जरा सी लापरवाही आपका भारी आर्थिक नुकसान करा सकती है। इसलिए साइबर वर्ल्ड में हमेशा एलर्ट रहें।

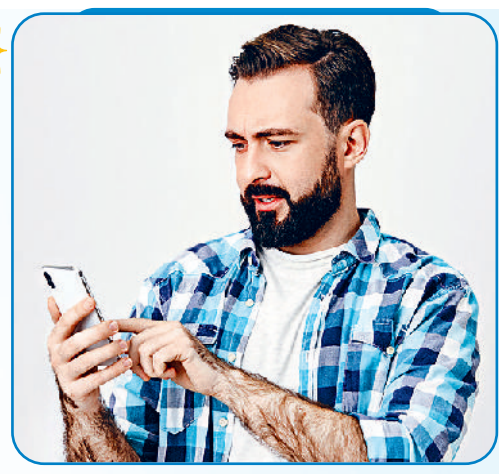

खूब हो रहा साइबर फ्रॉड

ना बरतें कोई लापरवाही

आजकल सोशल मीडिया पर साइबर तस्करी, साइबर अपराध, वित्तीय धोखाधड़ी, डीपफेक में काफी बढ़ोत्तरी हो रही है। ऐसी धोखाधड़ी अब आम हो गई है।

सोशल मीडिया पर फ्रॉड नेटवर्क: हाल के दिनों में लोगों को व्हाट्सएप पर नकली ई-चालान मिलना, नकली बिजली, पानी, गैस, केबल के बिल मिलने जैसी चीजें आम हो गई हैं, जिनमें व्हाट्सएप पर मैसेज भेजा जाता है और उसमें यह वॉर्निंग दी जाती

है कि यदि समय पर बिल का भुगतान नहीं किया गया, तो उनका कनेक्शन काट दिया जाएगा। हड़बड़ी में लोग अकसर व्हाट्सएप में आए उस बिल पर क्लिक कर देते हैं और कुछ समय बाद उन्हें पता चलता है कि उनके खाते से काफी पैसे निकाल लिए गए हैं। यहां तक कि फेसबुक पर भी बहुत रोचक कहानियां बनाकर उन्हें डाल दिया जाता है और जब लोग उन्हें पढ़कर आगे की कहानी जानने के लिए दिए गए लिंक पर क्लिक करते हैं, तो उस लिंक पर कई बार एडल्ट साइट्स से उनका सामना होता है या गलत लिंक पर क्लिक करने के कारण वे साइबर ठगी का शिकार हो जाते हैं।

हो रहा भारी नुकसान: साइबर क्राइम अब एक ऐसी समस्या के रूप में सामने आ रहा है, जो हमारा पैसा और मन की शांति दोनों को खत्म कर रहा है। साइबर अपराध पर 254वीं संसदीय स्थायी समिति की रिपोर्ट ने इस बात का खुलासा किया है कि साइबर ठगी के जरिए 31,500 करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान हुआ है। इस साल साइबर अपराधी एक साथ कई मोर्चों पर सक्रिय हैं। संसदीय रिपोर्ट भी इस बात की पुष्टि करती है कि साइबर अपराधी एक साथ कई हथकंडे आजमा रहे हैं। लोग यह समझते हैं कि इनसे बचने के उपाय, अत्यधिक कुशल हैकर्स का काम है, लेकिन इससे आम लोगों को यह समझना होगा कि उनको नेविगेट करने की क्षमता हम सबमें होनी जरूरी है।

बीते जुलाई माह में गुरुग्राम पुलिस द्वारा एक ऐसे कॉल सेंटर का भंडाफोड़ किया गया, जहां जालसाज वीआईपी नंबर्स और पुलिस स्टेशन की पृष्ठभूमि का एआई द्वारा उपयोग करके वीडियो कॉल पर कानून अधिकारी के रूप में पेश आते थे, जो लोगों को उनके नाम पर एक पैकेट में अवैध वस्तुएं होने का हवाला देकर उन्हें गिरफ्तार कर लेने के लिए डराते थे और उन्हें यह धमकी देते थे कि यदि वह तुरंत अपनी जमानत या वैरीफिकेशन के लिए एक निश्चित राशि का भुगतान नहीं करते, तो उन्हें कानूनी कार्यवाही का सामना करना पड़ सकता है। पुलिस द्वारा छापे में स्क्रीन स्क्रिप्ट और जाली आईडी मिली, इसके बाद कई गिरफ्तारियां हुईं, जिनका लिंक दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के नेटवर्क से था, जो सीधे भारतीयों को अपना निशाना बना रहे थे।

जागरूकता है जरूरी: यह सही है कि आज के दौर में साइबर अपराध इतने जटिल हो गए हैं और लोगों को ठगी का शिकार बनाने के उनके तरीके इतने दबे छिपे होते हैं कि आम लोगों में जागरूकता का अभाव होने के कारण वे सहजता से इसका शिकार हो जाते हैं। मसलन, अगर आपको कोई पुलिस अधिकारी होने का दावा करने वाले का कॉल आता है तो उनसे यह पूछा जा सकता है कि वीडियो कॉल के जरिए भला गिरफ्तारी कैसे हो सकती है? इस तरह की समझदारी और अवेयरनेस से फ्रॉड से बच सकते हैं।

बिना डरे रहें सजग: इन जटिल साइबर अपराधों के खिलाफ सुरक्षा के समाधान या तरीके इतने कठिन नहीं है, जितने हम समझते हैं। हमें हर चीज पर सवाल उठाना सीखना होगा और जीरो ट्रस्ट नीति अपनानी होगी। एक बार जब हम ऐसे मामले में जीरो ट्रस्ट नीति अपनाने लगते हैं तो साइबर सुरक्षा आसान

हो जाती है। किसी भी लिंक अटैचमेंट या मैसेज पर जाने से पहले बिना सोचे-समझे क्लिक नहीं करना चाहिए, क्योंकि साइबर जगत में हर अंजान को जांचने-परखने की नीति अपनाएं। किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले सोचें, विचार करें। वेडिंग इंविटेशन या ई-चालान की पीडीएफ/जेपीईजी फाइल होनी चाहिए, न कि एपीकेएस। एपीकेएस पर क्लिक करने का ही मतलब है आप हैकर को क्लिक कर रहे हैं। किसी को भी अपना ओटीपी या यूपीआई पिन या स्क्रीन शेयर न करें। क्योंकि कानून आपको इन्हें साझा करने के लिए नहीं कह सकता। ऑड यूआरएलएस, नए हैंडल्स, मिस मैच्ड लोगो, भ्रम पैदा करने वाली ईमेल आईडी पर क्लिक न करें। अगर आपके खाते से पैसों की ठगी हो जाती है तो 1930 नंबर पर कॉल करें और अपने बैंक को तुरंत फोन करके इसके बारे में सूचित करें। कुल मिलाकर ऑनलाइन ठगी से बचने के लिए बिना डरे एलर्ट रहना जरूरी है। *

{ कविता / आरती आस्था }

छोड़ना

मां छोड़ देती है
सब कुछ
अपने बच्चे के लिए।
वही बच्चा होकर बड़ा
छोड़ देता है
मां को
अपने प्रेम के लिए।
छोड़ते हैं दोनों ही
अपने-अपने प्रेम के लिए।
पर लगाना अनुमान
है लगभग असंभव
किसका छोड़ना
और किसका छूट जाना
होता है
ज्यादा पीड़ादायक।

{ व्यंग्य / भूपेंद्र भारतीय }

लचकलाल को भी मिले नोबेल पुरस्कार

हर साल अक्टूबर के महीने में नोबेल पुरस्कार का हल्ला रहता है। इस बार भी हल्ला रहा। लचकलाल फिर नोबेल पुरस्कार के लिए बेचैन हुए। वह नोबेल पुरस्कार चाहते हैं, भ्रष्टाचार के मामले में। उनका कहना है, इस क्षेत्र में उनसे अच्छा और श्रेष्ठ कार्य किसी ने नहीं किया है, ना ही कोई कर सकता है। इस क्षेत्र में उन्होंने जितने नवाचार किए हैं, उतने तो अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश ने अपना माल बेचने के लिए विश्व शांति के क्षेत्र में भी नहीं किए होंगे।

लचकलाल का यह कहना है कि भ्रष्टाचार में गोपनीयता के मामले में उन्हें नोबेल पुरस्कार मिलना चाहिए। वह कैसे-कैसे टेबल के नीचे से सेवा शुल्क लेकर जनसेवा करते रहे हैं, वो रिकॉर्ड बने हैं। लचकलाल भ्रष्टाचार में यूपीआई की भी सुविधा ले रहे हैं। उन्होंने भ्रष्टाचार को ऑन लाइन कर दिया है। उनकी टेबल पर घूस ऑन लाइन भी ली जाती है-जल्द यह तख्ती भी लग सकती है। लचकलाल को लगता है, वे अपनी भ्रष्टाचार की सेवाओं से विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। भ्रष्टाचार को उन्होंने अब शासकीय शिष्टाचार मान लिया है। इस प्रतिभा के पीछे उन्होंने ऐसी दिव्य दृष्टि पाई है कि एक बार में ही वह अच्छे से अच्छे ईमानदार अधिकारी को देखते ही समझ जाते हैं, यह अधिकारी अपनी सेवा कितने में प्रदान करेगा? इसकी सेवा का लाभ कैसे लेना है? इसकी निष्ठा का कितना दाम लगाना है? लचकलाल यह सब अपनी भ्रष्टाचारी दिव्य दृष्टि से कुछ ही दिनों में ताड़ लेते हैं कि साहब टेबल के कितने ऊपर और टेबल के नीचे कितने तक धंसे हैं? लचकलाल ने अपनी इस दिव्य दृष्टि और कला के सहारे बहुत से नवागत अधिकारियों, कर्मचारियों को भी भ्रष्टाचार के मामले में प्रशिक्षित किया है। कोई भ्रष्टाचार के लाभ और विशेषताओं पर लचकलाल बड़े-बड़े लेक्चर दे सकते हैं। उनका कहना है कि पहले भी बहुत से मंत्री और जनप्रतिनिधि, भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हुए प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थान तक में लेक्चर फटकार चुके हैं तो वह भी क्यों नहीं प्रसिद्ध बौद्धिक संस्थानों में लेक्चर दे सकते हैं!

कितना ही ईमानदार व्यक्ति शासकीय सेवा में 'सेवा परमोधर्मः' की भावना से आए, लेकिन उनकी दिव्य दृष्टि उसे भ्रष्टाचार की कला बहुत ही जल्दी सीखा देती है। इस कला को सीखने के बाद वह नवागत अधिकारी भ्रष्टाचार के दूध में पताशे(बताशे) की तरह घुल जाता है। लचकलाल भ्रष्टाचार की चाशनी बनाने में उसी तरह से दक्ष हैं, जैसे इन दिनों मिस्टर ट्रंप विश्व शांति की चाशनी बनाने के लिए अपनी वैश्विक चम्मच हिला रहे हैं। वह बात अलग है कि चाशनी बन नहीं रही है। इस बार भी तथाकथित विश्व शांतिदूत नोबेल पुरस्कार के लिए चम्मच हिलाते ही रह गए।

खैर! मिस्टर लचकलाल अपने अभियान में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। उन्हें भ्रष्टाचार की चाशनी बनाने और उसमें से जलेबी निकालने से कोई नहीं रोक सकता है। उनके पास भ्रष्टाचार के मामले में भ्रष्टों का जनाधार है। वे अपनी इस कला से लोकतंत्र की सेवा करना चाहते हैं। उन्हें लगता है कि इस कला से राष्ट्र निर्माण भी आसानी से किया जा सकता है। कम बजट में सड़कों, पुलों, सरकारी भवनों और सेवाओं का कार्य पूरा हो जाता है। भ्रष्टाचार उनके लिए सरकारी कार्यशैली का अभिन्न हिस्सा है। उसके बगैर अधिकारियों को कार्य करने में मजा नहीं आता और सरकारों को सरकार चलाने में मजा नहीं आता। लचकलाल की मानें तो वह जनता और सरकार के बीच भ्रष्टाचार, पुल का काम करते हैं। भ्रष्टाचार के लाभ और विशेषताओं पर लचकलाल बड़े-बड़े लेक्चर दे सकते हैं। उनका कहना है कि पहले भी बहुत से मंत्री और जनप्रतिनिधि भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हुए प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थानों तक में लेक्चर फटकार चुके हैं तो वह क्यों नहीं बौद्धिक संस्थानों में लेक्चर दे सकते हैं! उन्हें लगता है कि वह भ्रष्टाचार विषय के मामले में बुद्धिजीवी बन गए हैं। अब आखिर उन्हें क्यों नहीं इस क्षेत्र में सेवा, शोध और नवाचार के लिए नोबेल पुरस्कार मिले! *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

प्रेमानुभूति में भीगी कविताएं

प्रेम एक ऐसा विषय है, जिस पर असंख्य कविताएं और कहानियां लिखी जाती रही हैं लेकिन कोई भी रचना इसके बारे में स्थायी या अंतिम सच साबित नहीं हो पाती। दरअसल, यह इंसानी मनोजगत में उपजने वाली भावनाओं से निर्मित ऐसी दुनिया होती है, जिसे हर इंसान अलग तरीके से अनुभूत करता है। सविता सिंह के नए कविता संग्रह 'प्रेम भी एक यातना है' की कविताएं प्रेम के ऐसे ही अनदेखे, अबूझ क्षितिज से हमारा परिचय कराती हैं। यहां उनकी व्यक्तिगत अनुभूतियां बड़ी कोमलता के साथ प्रकृति और समष्टि में समाहित हो जाती हैं। इसी बिंदु पर उनकी कविताओं के व्यापक अर्थ हमारे सामने उद्घाटित होते हैं। प्रेम के जीवन में पदार्पण का मनोहारी बिंब इन पंक्तियों में देख सकते हैं, *'पूरा-पूरा दिन संगीत सा बजता रहता है आजकल/ बेजान दोपहरें भरी रहती हैं तितलियों के रंगों से/ मधुमक्खियों के पंखों से उपजती धुनों से।'* (प्रेम) इसी तरह एक अन्य कविता 'प्रेमरत' की ये पंक्तियां शरीर के स्तर से बहुत गहन मन-आत्मा के किसी तल पर घटित हो रही अनुभूतियों को व्यक्त करती हैं, *'अभी हमारे पास कहने को क्या था/हम तो भाषा में थे ही नहीं/हमारे पास महज अव्यक्त आवाजें थीं कुछ/ शब्द दूर थे हमसे।'* कह सकते हैं, आज के अमानवीय होते जा रहे हिंसा से आक्रांत युग में ये कविताएं, हमारे भीतर कुछ बेहतर बचे रहने की उम्मीद कायम रखने का संबल देती हैं। *

पुस्तक: प्रेम भी एक यातना है (कविता संग्रह),
लेखिका: सविता सिंह, **मूल्य:** 199 रुपए,
प्रकाशक: राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली

{ लघुकथा / अलका जैन 'आराधना' }

प्रेरणा

आईआईटी में सेलेक्शन न होने से हताश रौनक, रेल की पटरियों के किनारे चला जा रहा था। एक पल के लिए उसके मन में खुद को खत्म करने का ख्याल आ रहा था। अचानक मम्मी के शब्द उसके कानों में गूंजने लगे, 'रेल की पटरियां रेल को गंतव्य तक पहुंचाती हैं। बेटा, इनसे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा लेनी चाहिए... क्योंकि वास्तव में चलना ही जिंदगी है।'

रौनक के चेहरे पर मुस्कान आ गई। वह सोच रहा था कि आईआईटी में सेलेक्शन ना होना तो एक पड़ाव भर है, जीवन में और भी बहुत कुछ है करने के लिए। अब वह मुस्कुराते हुए घर वापसी का फैसला कर चुका था। घर पहुंचा तो मम्मी-पापा बेसब्री से उसका ही इंतजार कर रहे थे। दोनों ने एक-साथ उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'तुम्हारा पसंदीदा मूंग की दाल का हलवा बनाया है, इसे खाओ और नई राह पर आगे बढ़ने की शुरुआत करो। जिंदगी किसी मोड़ पर खत्म नहीं होती, नई शुरुआत कहीं से भी की जा सकती है।'

रौनक अपने मम्मी-पापा के पैरों में झुक गया। उसे लग रहा था कि रेल की पटरियों ने उसे जीवन से पलायन की नहीं जीवन को गले लगाने की प्रेरणा दे दी। *

हरिभूमि
रविवार भारती
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 26 अक्टूबर 2025

आयोजन
वीना गौतम

राजस्थान में अजमेर के निकट पुष्कर में आयोजित होने वाला धार्मिक-सांस्कृतिक पुष्कर मेला, पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यहां की भौगोलिक विशिष्टता और इससे जुड़ी धार्मिक मान्यताएं इस स्थल को और भी महत्वपूर्ण बना देते हैं। आगामी 30 अक्टूबर से 5 नवंबर तक आयोजित होने वाले इस मेले की खासियतों पर एक नजर।

देश की धार्मिक-सांस्कृतिक चेतना का संगम पुष्कर मेला

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश की आत्मा उसकी लोक-संस्कृति और धार्मिक परंपराओं में बसती है। ऐसी ही लोकधर्मी परंपराओं का वाहक है पुष्कर मेला। पुष्कर मेला न केवल राजस्थान बल्कि संपूर्ण भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर का प्रतीक है। पुष्कर मेला हर साल कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित होता है।

मेले से जुड़ी धार्मिक मान्यताएं: पुष्कर भारत का अद्वितीय नगर है। सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा का देश में एकमात्र मंदिर यहीं स्थित है। पुष्कर की धार्मिक मान्यता यह है कि ब्रह्माजी सृष्टि की रचना करने के बाद यज्ञ करने के लिए एक पवित्रस्थल की खोज कर रहे थे, तब एक कमल पुष्प उनकी हथेली से गिर पड़ा और यह जहां गिरा, उस स्थान पर पुष्कर झील बन गई। इसलिए यह स्थल पुष्कर तीर्थ कहलाता है।

पुष्कर झील में स्नान करते श्रद्धालु

कार्तिक पूर्णिमा के दिन इस झील में स्नान करना अत्यंत पुण्यदायी माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन ब्रह्माजी स्वयं झील के जल में स्नान करने के लिए आते हैं, जो व्यक्ति इस दिन यहां स्नान करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। यही कारण है कि पुष्कर मेला के समय देश के कोने-कोने से लाखों श्रद्धालु और साधु-संत यहां पवित्र स्नान के लिए पहुंचते हैं। धार्मिक दृष्टि से यह मेला केवल स्नान या पूजा का आयोजन नहीं बल्कि धर्म, भक्ति और लोकआस्था की जीवंत अभिव्यक्ति है। इस अवसर पर पुष्कर झील के घाटों पर होने वाले दीपदान और आरती का दृश्य भारतीय अध्यात्म का जीवंत रूप प्रस्तुत करता है।

लोकजीवन-परंपराओं का महाकुंभ: पुष्कर मेला सिर्फ भारतीय लोक-संस्कृति का ही बहुत बड़ा उत्सव नहीं है, यह पशु व्यापार का भी बहुत बड़ा मेला है। यहां समूचे भारत के ग्रामीण जीवन की जीवंत झांकी देखने को मिलती है। राजस्थान के विभिन्न जिलों से लेकर इस मेले में हरियाणा, पंजाब, गुजरात और उत्तर प्रदेश तक के ग्रामीण लोग अपनी पारंपरिक वेशभूषा, गीत, नृत्य और हस्तशिल्प के साथ आते हैं। पुष्कर मेले में होने वाले लोकनृत्य प्रतियोगिताओं में मटकी दौड़, ऊंट सजावट, ग्रामीण खेल, लोकसंगीत, कठपुतली, नाटक और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की धुनें, भारत की विविधता में एकता का अद्भुत संदेश देती हैं। यह मेला वास्तव में ग्रामीण भारत की सजीव आत्मा पेश करता है। यहां महिलाएं पारंपरिक लहंगे, ओढ़नी आदि में सजी दिखती हैं और पुरुष रंग-बिरंगी पगड़ियों में सजते हैं। इसी वेशभूषा में ये लोग आयोजित होने वाले लोक गीत-संगीत के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। यहां की रंग-बिरंगी भीड़ वास्तव में भारत की जीवंत संस्कृति की धड़कन है, जिसने आधुनिकता के बीच भी अपनी जड़ें मजबूती से जमा रखी हैं।

आयोजित होता है बहुत बड़ा पशु मेला

व्यापार-पर्यटन का अवसर: जैसा हम सब जानते हैं कि पुष्कर मेले में भारत का सबसे बड़ा पशु मेला भी लगता है। विशेष रूप से ऊंट और घोड़ों के व्यापार के लिए। राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में पशुधन आजीविका का महत्वपूर्ण आधार है। इस मेले के दौरान यहां हजारों ऊंट, घोड़े और गाय, बिकने के लिए आते हैं। इस खरीद-फरोख्त के जरिए स्थानीय अर्थव्यवस्था को खूब बल मिलता है। इसके साथ ही इस मेले का पर्यटन उद्योग के लिहाज से भी बहुत महत्व होता है। पुष्कर मेले के दौरान देश-विदेश से लाखों सैलानी यहां आते हैं। विदेशी पर्यटक विशेषकर यहां भारतीय संस्कृति, योग, संगीत और अध्यात्म का जीवंत अनुभव करने आते हैं। इस मेले में स्थानीय हस्तशिल्प, कपड़े, गहने और लोककला की बिक्री से ग्रामीण कारीगरों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

राष्ट्रीय लैंडमार्क के रूप में प्रतिष्ठित: आज पुष्कर मेला केवल एक पारंपरिक आयोजन भर नहीं है। यह वैश्विक सांस्कृतिक उत्सव बन चुका है। भारत सरकार और राजस्थान पर्यटन विभाग ने इसे ग्लोबल फेयर के रूप में विकसित किया है। सोशल मीडिया और यात्रा चैनलों के कारण पुष्कर मेले की पहचान दुनिया के कोने-कोने में पहुंच चुकी है। पुष्कर मेले के दौरान यहां योग शिविर, कल्चरल वर्कशॉप और डेजर्ट सफारी जैसे आयोजन पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। आज जब अपनी सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत बहुत करीने से प्रस्तुत कर रहा है, तब पुष्कर इस गतिविधि का महत्वपूर्ण हिस्सा बनकर उभरा है। आज पुष्कर मेला अपनी लोक-आध्यात्मिक पहचान के लिए राष्ट्रीय लैंडमार्क की ख्याति हासिल कर चुका है। यह मेला दर्शाता है कि भारतीय सभ्यता, लोकजीवन की सहज अभिव्यक्ति में भी फलती-फूलती है। *

अनोखा भौगोलिक स्थल भी है पुष्कर

पुष्कर अरावली पर्वतमाला के बीच में स्थित है। जहां रेगिस्तान का शुष्क भू-भाग और झील का शांत जल एक अद्भुत विरोधाभास रचते हैं। यह क्षेत्र पर्यावरणीय दृष्टि से दुनिया के विशिष्ट क्षेत्रों में गिना जाता है। क्योंकि राजस्थान में स्थित यह ऐसा क्षेत्र है, जहां जल और मरुस्थल का साझा अस्तित्व देखने को मिलता है। ऐसी विविधता का दूसरा उदाहरण दुर्लभ है। अक्टूबर और नवंबर के महीने में पुष्कर का तापमान बेहद सुहावना होता है। इस कारण इस मौसम में यहां देश-विदेश के लाखों पर्यटक घूमने के लिए आते हैं। पर्यटकों के लिए यह मौसम और पुष्कर की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति महत्वपूर्ण आकर्षण का जरिया बन जाती है। झील के चारों ओर फैले घाट, मंदिरों की कतारे और दूर तक फैले रेत के टीले, इस स्थान को एक आध्यात्मिक केंद्र बना देते हैं। यही कारण है कि आज के दौर में पुष्कर की प्रतिष्ठा एक वैश्विक, सांस्कृतिक स्थली के रूप में भी है।

दीपावली के बाद कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देव उठनी, देवोत्थानी या प्रबोधिनी एकादशी पर्व मनाते हैं। पुराणों में इस दिन की पूजा, व्रत का बहुत महत्व बताया गया है। इसके महात्म्य के बारे में जानिए।

अत्यंत पुण्यकारी-शुभ फलदायी
प्रबोधिनी एकादशी व्रत-पूजन

पर्व-परंपरा
प्रभा पारिक

चातुर मास वर्षा काल के चार महीनों के शयन के बाद जब देव उठते हैं, उस दिन कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि होती है। इसी शुभ अवसर से मनुष्यों को देवताओं के आह्वान का अवसर प्राप्त होता है। इसी तिथि से मांगलिक कार्यों, जैसे गृह प्रवेश, विवाह आदि आरंभ होते हैं।

धार्मिक मान्यता: प्रबोधिनी एकादशी की मंगल बेला पर भगवान विष्णु का विवाह शालीग्राम रूप में वृंदा तुलसी के साथ किया जाता है। सुबह तुलसी के चौरे, क्यारी, गमले को साफ करके गेरू, चूने से मांड़ने अथवा रंगोली बना कर सजाया जाता है। फूल, धूप, दीप, आरती की जाती है। मौसमी फलों के साथ मूली, केला, रूई, ग्वार फली, सुआली आदि अर्पण करते हैं। शाम के समय प्रतीकात्मक रूप से घरों में, मंदिरों में तुलसी का विवाह शालिग्राम जी के साथ रचाया जाता है। इस विवाह में घर में पुत्री के विवाह में दिया जाने वाला श्रृंगार और सुहाग की वस्तुएं अर्पित की जाती हैं। ठीक वैसे ही जैसे हम अपने घर-परिवार की कन्याओं के विवाह पर करते हैं। ये श्रृंगार की सामग्री किसी भी नव-विवाहिता स्त्री, पुरोहित या सुहागन को देने की प्रथा है। इस दौरान मंगल गीतों के साथ इस उत्सव का आयोजन किया जाता है। जिस घर में कन्यादान का अवसर न मिलने की स्थिति हो, वे तुलसी विवाह को आयोजित करके कन्यादान का पुण्य प्राप्त कर सकते हैं।

व्रत का महात्म्य: पुराणों में बताया गया है कि कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रबोधिनी एकादशी के व्रत का फल एक सहस्र अश्वमेघ यज्ञों और सौ राजसूय यज्ञों के बराबर माना जाता है। जिस वस्तु या पद या आकांक्षा को प्राप्त करना कठिन लगे, इस व्रत को करने से वो सहज ही प्राप्त हो जाती है। इस दिन रात्रि जागरण का विशेष महत्व है। माना जाता है कि प्रबोधिनी एकादशी के दिन किए गए व्रत, दान-पुण्य का फल, समस्त तीर्थों की यात्रा करने, गौ, स्वर्ण, भूमि आदि के दान से मिलने वाले फल के समतुल्य होता है। इस दिन व्रत और पूजन से निःसंतान को संतान की प्राप्ति होती है। यह व्रत उद्धार करने वाला और भगवान में आस्था बढ़ाने वाला माना जाता है। इस व्रत को श्रद्धापूर्वक करने से भगवान नारायण प्रसन्न होते हैं। साधक के पितरों को सद्गति की प्राप्ति होती है। पिछले हजार जन्मों में किए गए पाप भी इस एकादशी को रात्रि-जागरण करते हुए श्री नारायण जप करने से नष्ट हो जाते हैं। इस दिन व्रत के दौरान श्रद्धापूर्वक 'ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय' का जाप करना बहुत कल्याणकारी और पुण्य फलदायी होता है।

मनाते हैं कई रूपों में: प्रबोधिनी एकादशी के पर्व को अत्यंत पुण्यकारी माना जाता है। यही वजह है कि विभिन्न राज्यों में इसे अलग-अलग तरह से मनाते हैं। इस दिन को पवित्र मानते हुए नर के रूप में नारायण एवं नारी के रूप में नारायणी की स्तुति करते हैं। तुलसी का महत्व, हमारे स्वास्थ्य, सुख समृद्धि, वास्तु से जोड़कर देखा जाता है। गुजरात में दीपावली के पूर्व की एकादशी से देव उठनी एकादशी तक प्रतिदिन सुबह जल्दी उठकर घर के द्वार पर रंगोली, तुलसी पूजा और दीपमाला सजाने की प्रथा है। यह कार्तिक पूर्णिमा के दिन दीपमाला के साथ पूर्ण होती है। *

विशिष्ट पेड़ / वीना

कई तरह से उपयोगी फालसे का पेड़

फालसा का वैज्ञानिक नाम ग्रेविया एशियाटिक है। यह एक छोटा झाड़ीदार पेड़ होता है, जो गर्म और उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में उगता है। फालसा को अपने देश में एक लोकप्रिय फल के रूप में जाना जाता है। इसका स्वाद खट्टा, मीठा और ताजगी भरा होता है। यह पेड़, हरे, अंडाकार, मोटे और खुरदरे पत्तों वाला होता है, इसमें छोटे सफेद या हल्के गुलाबी फूल आते हैं, जबकि छोटे गोलाकार, नीले या काले रंग के फल लगते हैं।

कई राज्यों में होती है खेती: फालसे का पेड़ देश के ज्यादातर हिस्सों में पाया जाता है। मसलन, उत्तर भारत में पंजाब, हरियाणा। मध्य भारत में महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश। पश्चिमी भारत में राजस्थान, गुजरात तथा पूर्वी भारत में बिहार, झारखंड, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल आदि में भी फालसे की खेती की जाती है। इस तरह देखें तो यह लगभग भारत के हर क्षेत्र में उगता है। दरअसल, यह गर्म और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह से फलता-फूलता है। दोमट और हल्की बलुई मिट्टी में विशेष तौर पर फालसा का पेड़ तेजी से बढ़ता और विकसित होता है। अगर व्यावसायिक तौर पर इसकी खेती करें तो एक से दो मीटर की दूरी पर पौधे लगाए जाने चाहिए, समय-समय पर इसकी पुरानी टहनियों को काटते रहने से इसका विकास तेजी से होता है और पैदावार भी अच्छी होती है।

आर्थिक रूप से लाभकारी: फालसे की खेती से किसानों को कई तरह के लाभ होते हैं। फालसा के छोटे पेड़ हर साल 5 से 10 किलोग्राम तक फल देते हैं और अगर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से देखें तो 8 से 10 टन फालसे का उत्पादन हो जाता है। फालसे की खेती में लागत बहुत कम आती है। क्योंकि इसे खाद पानी की उतनी जरूरत नहीं पड़ती, जैसे दूसरे फल के पेड़ों को पड़ती है। फालसा, पेड़ लगाने के पहले या दूसरे वर्ष में ही फल देने लगता है। ताजे फलों का स्थानीय बाजार भी काफी आकर्षक है। फालसे का पेड़ सामान्यतः 10 से 15 सालों तक फल देता है।

स्वास्थ्य के लिए लाभकारी: फालसे में कई तरह के पोषक तत्व पाए जाते हैं। जैसे- विटामिन-ए, बी-3 और सी। साथ ही इसमें पोटेशियम, कैल्शियम, आयरन और फास्फोरस जैसे खनिज तत्व भी पाए जाते हैं। फालसे में एंटीऑक्सीडेंट्स, एंटीमाइक्रोबिअल और एंटीइंफ्लेमेट्री गुण भी होते हैं, इसलिए फालसा की अच्छी-खासी मांग आयुर्वेदिक औषधियों में भी होती है। इसके अलावा फालसे के फल की मांग जूस, शर्बत, मुरब्बा आदि बनाने में भी होती है। *

नदी गाथा
निनाद गौतम

कोसी नदी को बिहार का शोक कहा जाता है, यह हम सब जानते हैं। लेकिन इसी के साथ सच्चाई यह भी है कि बिहार की जीवनरेखा या कहें बिहार का हर्ष भी यही कोसी नदी है। इस नदी की विशेषताओं के बारे में जानिए।

बिहार का शोक ही नहीं हर्ष भी है कोसी नदी

बिहार का शोक और हर्ष कही जाने वाली कोसी नदी का उद्गम हिमालय की पर्वत श्रेणियों में नेपाल में होता है। 720 किलोमीटर लंबी यह नदी नेपाल में 441 किलोमीटर और बिहार में करीब 288 किलोमीटर बहती है। यह बिहार में सुपौल जिले में प्रवेश करती है और मधेपुरा, सहरसा, पूर्णिया, अररिया होते हुए कटिहार जिले में कुरसेला के पास गंगा में मिल जाती है।

इसलिए कहते हैं शोक: कोसी को बिहार का शोक इसलिए कहते हैं, क्योंकि हिमालय से आने वाली यह बहुप्रवाही नदी जब बिहार में प्रवेश करती है, तो इसका बहाव बहुत तेज होता है। जिस कारण यह बार-बार अपना मार्ग बदलती है। पिछली ढाई सदियों में कोसी नदी 120 किलोमीटर पश्चिम की ओर खिसककर अपना मार्ग बदल चुकी है। क्योंकि इस हिमालयी नदी में नेपाल में तीन सहायक नदियां अरुण, तामूर और सुनकोशी भी आ मिलते हैं, इसलिए जिस समय यह बिहार में घुसती है, तो इसका बहाव इतना तेज होता है कि लगभग हर साल यह नदी बिहार में बाढ़ लाने का कारण बनती है ही, यह हर साल अपने तटबंध तोड़कर प्रदेश के उत्तरी जिलों में हाहाकार मचा देती है। इसलिए कोसी को बिहार का शोक कहते हैं। इसके चलते हर साल बिहार को करोड़ों रुपए की आर्थिक हानि और काफी लोगों की जनहानि होती है।

इसलिए कहलाती है हर्ष: सच्चाई यह भी है कि एक तरफ जहां कोसी बिहार का शोक है, वहीं दूसरी तरफ यह बिहार की जीवनरेखा भी कही जाती है। क्योंकि गंगा की तरह ही हिमालयी क्षेत्र से निकलने वाली यह नदी हर साल बाढ़ के समय अपने साथ जो पोषक तत्वों से भरी गाद या सिल्ट लाती है, उससे उत्तर बिहार की मिट्टी बेहद उपजाऊ हो जाती है। कोसी परियोजना के तहत लाखों हेक्टेयर जमीन में सिंचाई होती है और बिहार में उत्तम दर्जे की खेती संभव होती है। यही नहीं कोसी नदी का पानी पीने और कृषि दोनो में इस्तेमाल होता है। साथ ही कोसी बिहार और नेपाल को जोड़ने वाली वह नदी है, जो सीमांचल और मिथिला के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन को बहुत गहरे तक प्रभावित करती है। यह नदी मिथिला और सीमांचल क्षेत्र की लोकगाथाओं और लोकगीतों का हिस्सा है। इसे मातृस्वरूपा माना जाता है और लोकगीतों और त्योहारों में कोसी का जिक्र आता है। कोसी नदी के पानी से बनने वाली विद्युत ऊर्जा से तटबंधीय सड़कें और क्षेत्रीय विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस तरह अगर कोसी नदी ने बार बार बाढ़ और तबाही दी है, तो वहीं इसी ने बिहार को उपजाऊ कृषि व्यवस्था, सिंचाई की सुविधा और कृषि आधारित समृद्ध जीवन भी दिया है।

बिहार में होता है तेज प्रवाह: जब तक कोसी नेपाल में बहती है यह इतनी बड़ी और भयावह वेग वाली नदी नहीं होती, जितना बिहार के सुपौल जिले में प्रवेश के बाद फूटती है। कोसी नदी में प्रवाहित जल की मात्रा 2166 क्यूबिक मीटर प्रति सेकेंड है, जबकि मानसून के दिनों में इसका यही प्रवाह 18000 क्यूबिक मीटर प्रति सेकेंड हो जाता है, इससे इसके प्रचंड वेग का अंदाजा लगाया जा सकता है। कोसी नदी का कैचमेंट एरिया लगभग 74,500 वर्ग किलोमीटर (नेपाल और भारत में मिलाकर) है। इसीलिए मानसून के मौसम में इसका जलप्रवाह देश की दो बड़ी गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के बाद सबसे ज्यादा होता है। *

बॉलीवुड / हेमंत पाल

एक समय तक ग्रामीण परिवेश और गांव की मिट्टी की सोंधी महक वाली फिल्में खूब बनती और पसंद की जाती थीं। लेकिन जैसे-जैसे व्यावसायिकता हावी होती गई और लोगों के जीवन में शहरीकरण बढ़ता गया, फिल्मी पर्दे से गांव गायब होने लगे। फिल्मों के बदलते ट्रेंड पर एक नजर।

फिल्मी कहानियों में अब नजर नहीं आते गांव

'मदर इंडिया' में दिखा वास्तविक ग्राम्य जीवन

ग्रामीण परिवेश पर बनी हिट फिल्म 'लगान'

हाल के वर्षों में आई हिंदी फिल्मों की बात करें तो उसमें गांव और ग्रामीण परिवेश की कहानियां बिल्कुल गायब रही हैं या न के बराबर ही नजर आई हैं। कथानकों से गांव विलुप्त होने का मतलब है, देश की 60% आबादी सिनेमा से गायब हो गई। अब जो फिल्में बनाई जा रही हैं, उनकी कहानियां 40% शहरी आबादी पर केंद्रित रहती हैं। इस सच्चाई को भी नकारा नहीं जा सकता कि गांव के जीवन की कहानियों से हिंदी सिनेमा का बॉक्स ऑफिस समृद्ध नहीं हो सकता। लेकिन समानांतर सिनेमा का तो मूल आधार ही ग्रामीण पृष्ठभूमि होती है, उसे ही इन कहानियों का प्रतिबिंब कहा जाता है। 'अंकुर', 'पार', 'दो बीघा जमीन', 'सूरज का सातवां घोड़ा' और 'अंतर्नाद' जैसी फिल्में ग्रामीण भारत का प्रतिनिधित्व करने में सफल रहीं। लेकिन अब ऐसी फिल्में भी नहीं बनती हैं।

गांवों से दूर हो रही फिल्में: याद कीजिए कि पिछले कुछ सालों में ऐसी कोई नई फिल्म देखी, जिसमें गांव, वहां का जीवन और गांव वालों की पीड़ा नजर आई हो! हाल ही में एक फिल्म 'लापता लेडीज' जरूर आई, पर उसका कथानक गांव पर केंद्रित न होकर, बदल गई दो दुल्हनों का था। याद नहीं आता कि आमिर खान की 'लगान' के बाद ऐसी कोई फिल्म आई हो, जिसकी पूरी कहानी गांव पर केंद्रित रही हो। आज के दौर में जो फिल्में आ रही हैं, वो हाई-सोसायटी लाइफस्टाइल और षडयंत्रों के आस-पास घूमती कहानियां हैं। उनमें कॉरपोरेट कल्चर होता है, बिजनेस के जरिए साजिशें रची जाती हैं, कंपनियों को टेकओवर करने की चालें होती हैं।

'स्वदेश' में भी दिखी ग्रामीण परिवेश की झलक

आर्थिक कारण हैं जिम्मेदार: आज स्थिति यह है कि ज्यादातर फिल्में सौ, दो सौ और पांच सौ करोड़ के बिजनेस का लक्ष्य लेकर बनाई जाती हैं। कमाई की यही होड़ हिंदी फिल्मों से गांव के गायब होने का सबसे बड़ा कारण है। फिल्मकारों की नजर में गांव की कहानियों पर फिल्में बनाना कमाऊ विषय नहीं है। अब किसी फिल्म में गांव दिखाई भी देता है, तो किसी और संदर्भ में। मिसाल के तौर पर 'स्वदेश' जैसी फिल्म में ऐसी कोशिश की गई लेकिन यह ग्रामीण परिवेश की फिल्म नहीं थी, बल्कि स्वदेश वापसी पर आधारित थी। इस बीच पहलवानी पर 'दंगल' फिल्म आई, पर इसमें भी गांव मूल रूप में नहीं दिखा। कुछ साल पहले 'पीपली लाइव' आई थी, जो गांव की सच्चाई और समस्याओं वाली फिल्म थी। इसमें किसानों के लिए बनी योजनाओं को बाबुओं और अफसरों द्वारा हड़पने का जिक्र ज्यादा था। लेकिन बड़े तबके को यह फिल्म समझ में ही नहीं आई सो आर्थिक रूप से फायदेमंद नहीं रही।

ग्रामीण फिल्मों का था सुनहरा दौर: सिनेमा का एक दौर ऐसा भी आया था, जब गांव और गांव वाले ही सिनेमा की पहचान हुआ करते थे। लेकिन जैसे-जैसे सिनेमा का बाजार बढ़ा, परदे से गांव गायब होते गए। फिल्मों का इतिहास टटोला जाए, तो शुरुआती फिल्मों का कथानक गांव की पगडंडियों से होकर ही गुजरा। वी. शांताराम की 'दो बीघा जमीन', विमल रॉय की 'यादगार' और 'बंदिनी,' राज कपूर की 'आवारा', 'श्री 420' और 'बूट पॉलिश' ग्रामीण परिवेश की ऐसी फिल्में थीं, जिन्होंने देश और दुनिया को वहां की समस्याओं और उनके जीवन से रूबरू करवाया था। गांव के जीवन पर बनीं इन फिल्मों में एक अलग सी महक होती थी।

धीरे-धीरे दूर हो गई गांव की महक: सिनेमा के परदे से गांव की मिट्टी की सौंधी महक ही नहीं, लोकगीत भी गायब हो गए। यह दौर एक दो सालों में नहीं आया। 80 के दशक के बाद से ही फिल्मकारों ने धीरे-धीरे गांवों की धूलभरी पगडंडी को छोड़ दिया था। फिल्मों में खेत-खलिहान, लहलहाती फसलें, हल चलाते किसान, खेत जोतते ट्रैक्टर, गांव की चौपाल और वहां की पंचायतें गायब हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म की कुछ वेब सीरीज में गांव जरूर दिखाई दिए पर उनका फोकस अपराध और अपराधियों पर फोकस होता है। वास्तव में ग्रामीण इलाकों, गांव की कहानियों और किसानों के किरदार में निर्देशक, निर्माता और यहां तक कि दर्शकों की भी रुचि नहीं है।

अब ट्रेंड पर बनती हैं फिल्में: अब तो यह हालात हैं कि गांव का जीवन परदे से लगभग गायब ही हो गया है। अब तो एक फार्मूला हिट होते ही उस जैसी फिल्में बनने लगती हैं। आजकल यही ट्रेंड बन गया है। लेकिन किसी फिल्मकार ने 'लगान' की सफलता के बाद भी

रामगढ़ गांव की पृष्ठभूमि पर बनी 'शोले'

उसका अनुसरण नहीं किया। ब्लॉक बस्टर सफल हिंदी फिल्म 'शोले' वास्तव में रामगढ़ गांव की कहानी थी। लेकिन इस फिल्म में भी गांव वास्तविक रूप में नहीं था। जो गांव था, वो डाकू गब्बर सिंह और बदला लेने वाले ठाकुर साहब के बीच कहीं गुम हो गया था।

अब तो ग्रामीण जिंदगी और वहां के रीति-रिवाजों पर फिल्में बनाने के लिए पहचाने जाने वाले राजश्री प्रोडक्शंस भी संयुक्त परिवारों और उसकी साजिशों की कहानियों पर मल्टीस्टारर फिल्में बनाने लगा है। 'नदिया के पार', 'बालिका वधु' और 'गीत गाता चल' जैसी बेहतरीन फिल्में बनाने वाली यह फिल्म निर्माण कंपनी भी गांव से शहर पहुंच गई है। दरअसल, सारा मामला व्यावसायिकता के खेल का है। ऐसे में भला कौन पिछड़ना चाहेगा। इसीलिए फिल्मी पर्दे से गांव दूर होते जा रहे हैं। *